मीरा बाई की शब्दावली

और

जीवन-चरित्र

जिस में

उन के अति कोमल, मधुर, रसीले और प्रेम रस में पगे हुए पद मुख्य मुख्य अंगों और रागों के अनुसार रक्खे गये हैं

इस छापे में कुछ शब्द और कड़ियाँ जो अब मिली हैं बढ़ा दी गई हैं और पाठ और अर्थ की ग़लतियाँ भी दुरुस्त कर दी गई हैं।

प्रकाशक तथा मुद्रक

बेलविडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

छठवीं बार   सन् १९५३ ई०   मूल्य १)

संतबानी पुस्तक-माला पर दो शब्द

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले कहीं छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो प्राय: ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्राय: कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबिला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई हैं, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट नोट में दे दिये गये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही में छापा गया है। और जिन भक्तो और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृतान्त और कौतुक संक्षेप से फुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकी हैं, जिनका नमूना देखकर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओ और बुद्धिमानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है; जो सोने के तोल सस्ता है।"

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हे हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षायें दी गई हैं। उनका नाम और दाम सूची में छपा है। कुल पुस्तकों की सूची नीचे लिखे पते से मँगाइये।

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद—२

परम भक्त मीराबाई

नाथ तुम जानत हो घट घट की।

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।
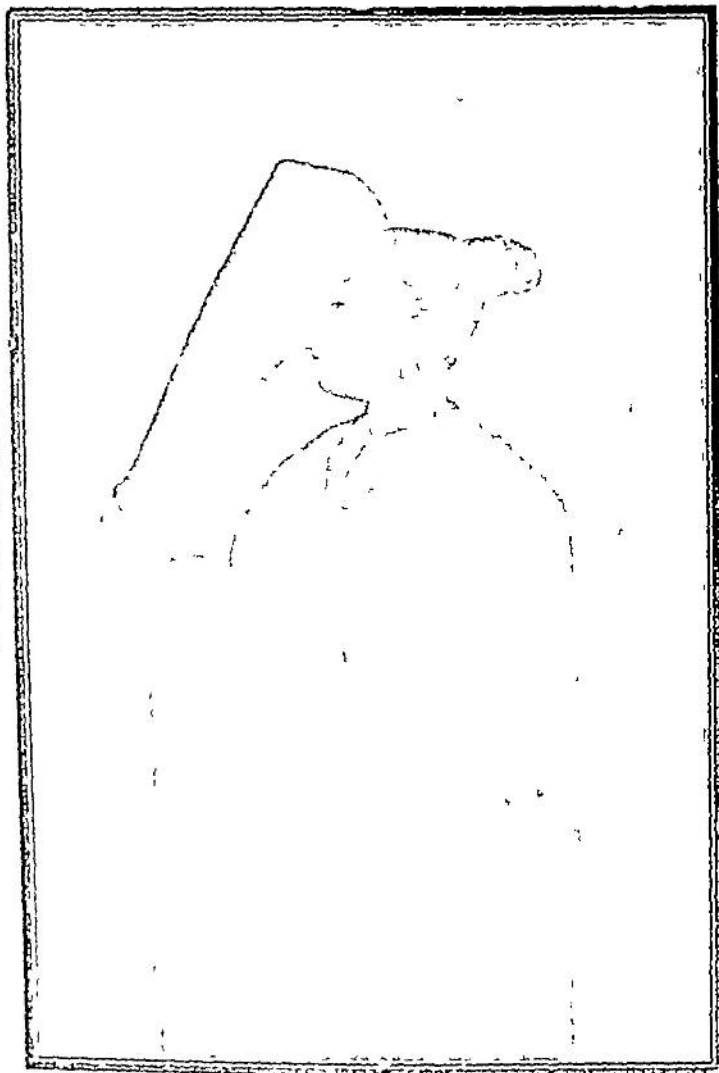
॥ मीरा बाई का जीवन-चरित्र ॥

परम भक्त मीरा बाई के अनूठे प्रेम और निराली भक्ति की क्या महिमा कही जावे कि जिसका अब तक हिन्दुस्तान भर में दृष्टान्त दिया जाता है। वास्तव में यह एक अचरजी स्त्री थीं कि विष के प्याले को यद्यपि जानती थीं कि जहर है पर जो कि वह चरनामृत के नाम से दिया गया उसके पीने में कुछ सोच विचार न किया। भक्त-माल के कर्ता नाभाजी ने इनके प्रेम की महिमा में यह छप्पै लिखा है—

सदरिस[1] गोपिन प्रेम प्रगट कलिजुगहिं दिखायो।
निरअंकुस अति निडर रसिक जस रसना गायो॥
दुष्टन दोष विचारि मृत्यु को उद्यम कीयो।
बार न बाँको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो॥
भक्ति निसान बजाय के काहू ते नाहीं लजी।
लोक लाज कुल शृंखला[2] तजि मीरा गिरधर भजी॥

यह परम भक्त बाई जी जोधपुर के मेरता राठोर रतनसिंह जी की इकलौती बेटी और मेरता (मारवाड़ देश) के राव दूदा जी की पोती थीं। इनका जन्म कुड़की नामक गाँव में (जो उन गाँवों में से है जो कि उनके पिता को गुज़ारे के लिये दूदा जी से मिले थे) संवत १५५५ और १५६० विक्रमी के दर्मियान हुआ और उदयपुर (मेवाड़) के सीसोदिया राजकुल में महाराना सांगाजी के कुँअर भोजराज के साथ संवत १५७३ विक्रमी में व्याही गईं।

इनके देहान्त के समय का पता ठीक नहीं चलता। मुंशी देवीप्रसाद जी मुंसिफ राज जोधपुर ने इनके जीवन-चरित्र में एक भाट की जुबानी लिखा कि इनका देहान्त संवत १६०३ विक्रमी अर्थात् सन् १५४६ ईसवी में हुआ परन्तु भक्तमाल से इन दो बातों का प्रमान पाया जाता है—(१) अकबर बादशाह तानसेन के साथ इन के दर्शन को आया, (२) गुसांईं तुलसीदास जी से इन का परमार्थी पत्र व्यौहार था। समझने की बात है कि अकबर सन् १५४२ ई० में पैदा हुआ और सन् १५५६ ई० में तख़्त पर बैठा और गुसांईं तुलसीदास जी सन् १५३३ ई० में (संवत १५८९ विक्रमी) में पैदा हुए तो यदि मीरा बाई के देहान्त का समय १५४६ ई० में माना जाय तो अकबर की उमर उस समय चार बरस की होती है और गुसांईं जी की चौदह बरस की, जो कि न तो अकबर को साध दर्शन की उमंग उठने की अवस्था मानी जा सकती और न गुसांईं जी की भक्ति और कीर्त्ति की प्रसिद्धि का समय कहा जा सकता। इसलिये हमको भारतेन्दु श्री हरिश्चन्द्र जी स्वर्गवासी का अनुमान कि मीरा बाई ने संवत १६२० और १६३० विक्रमी के दर्मियान शरीर त्याग किया ठीक जान पड़ता है जैसा कि उन्होंने उदयपुर दर्बार की सम्मति से निर्णय किया था और कविवचनसुधा की एक प्रति में छापा था।

मीराबाई व्याह होने पर अपने पति के साथ चित्तौड़ गईं और उनके पति का देहान्त व्याह होने से दस बरस के भितर हो गया परन्तु इनको इस महा बिपत का विशेष शोक नहीं हुआ बरन् भगवत भजन में और जियादा चित्त को लगा कर प्रीत

---

१ सदृश=भाँत। २ लोहे की जंजीर।

प्रतीत की दृढता के साथ भक्ति में तत्पर हुई और रैदासजी को अपना गुरू धारन किया। इस बात को रैदासजी की बानी में उनका जीवन चरित्र लिखने के समय हम पक्के तौर पर निश्चित नहीं कर सके थे परन्तु अब मीरा बाई के कई पदों के पढने से उसका विश्वास होता है—देखो पृष्ट १७ कड़ी ८ शब्द ४१ की पृष्ट २१ कड़ी १ शब्द ५७ की, पृष्ठ ३१ कड़ी १४ की और पृष्ठ ३२ कड़ी ७ शब्द १ की।

बचपन ही से मीरा बाई को परमार्थ की चाव और गिरधरलाल जी का ईष्ट था। इस इष्ट का प्रगट कारन इन की माता कही जाती हैं कि जिन से इन्हों ने पड़ोस में एक कन्या का विवाह होते देखकर पूछा था कि मेरा दुल्हा कौन है और इनकी माता ने हँस कर गिरधर लाल की मूरत को बतलाया था। कहीं कहीं ऐसी भी कथा प्रसिद्ध है कि इस मूरत के मीरा बाई के बाप के घर आने का संजोग यह हुआ कि एक बार वहाँ एक साधू ठहरा था जिसकी पूजा मे यह मूरत थी। मीरा बाई ने उस मूरत का नाम पूछा और फिर साधू से उसको माँगा। साधू ने देने से इनकार किया। इस पर मीराबाई ने ऐसा हठ धारा कि दो तीन दिन तक भोजन नहीं किया तब उनके माता पिता ने उस साधू को बहुत कुछ देकर विनयपूर्वक राजी करना चाहा परन्तु साधु बोला कि हम अपने इष्टदेव से कदापि अलग न होंगे। रात को साधूजी की मूरत ने स्वप्न दिया कि यदि तुम अपना भला चाहते हो तो हम को उस लड़की के पास रहने दो। बेचारा साधू सबेरा होते ही गिरधरलाल जी की मूरत को मीराबाई के पिता के घर पहुँचा आया।

एक कथा के अनुसार मीराबाई पिछले जन्म मे श्रीकृष्ण चन्द्र की सखियों मे थीं जिनकी प्रचंड भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने बरदान दिया था कि कलयुग में हम निज रूप से तुम्हारे पति होंगे जिसका इशारा राग सावन के नवें शब्द की कड़ी नंबर २ और३ मे है (देखो पृष्ट ..)।

जब मीराबाई विधवा हो गईं और भगवत भजन और साधु सेवा बेधड़क निरतर करने लगीं तो उनके देवर महराना विक्रमाजीत को (जो अपने भाई महाराना रतनसिंह के बाद चित्तौड की राजगद्दी पर बैठे थे) इनके यहाँ साधुओं की भीड भाड़ का लगा रहना न सुहाया और दो भरोसे की सहेली चम्पा और चमेली नामक को इनके पास तैनात किया कि इनको समझाती और साधुओं के पास बैठने से रोकती रहे, पर मीराबाई के संग के प्रताप से थोडे ही दिनों में उन पर भी भक्ति का रंग चढ गया और मीराबाई के प्रयोजन की सहायक बन गईं। यही दशा और सहेलियों और दासियों की हुई जो मीरा जी के बरजने और उन पर चौकसी रखने के काम पर नियत की गईं। अंत को राना ने यह कठिन काम अपनी सगी बहिन ऊदा बाई (मीरा बाई की ननद) को सौंपा और वह कुछ समय तक अपने कर्त्तव्य को बड़ी तन्देही से अंजाम देती रहीं। दिन मे कई बार मीरा बाई के महल में जाकर उनको हर तरह पर समझाती देती और रोक टोक करती थीं। थोड़े से पद जिन में मीरा बाई ने इन विरोधियों की चर्चा की है चुन कर इस ग्रंथ में इकट्ठे कर दिये गये हैं उन्हीं में मीरा बाई और ऊदा बाई का प्रश्नोत्तर भी है।

जब ऊदा बाई की समझौती का कुछ भी मीरा बाई पर असर नहीं हुआ तब राना ने कुपित हो किसी मंत्री की सलाह से मीराबाई के पास विष का कटोरा भगवत चरनामृत के नाम से भेजा। ऊदा बाई जो इस भेद को जानती थी उन्हों ने

मोह वस मीरावाई से सब हाल कह दिया और उनको उसके पीने से रोकना चाहा पर मीरा वाई ने वड़ी दृढता से उत्तर दिया कि जो पदार्थ भगवत चरनामृत के नाम से आया है उसका परित्याग करना भक्ति के प्रन के विरुद्ध और उसे सिर पर चढ़ा कर वड़े उत्साह के साथ पी गईं। कोई २ लिखते हैं कि इसी जहर से मीरा वाई ने प्राण त्याग किया परन्तु कई पुस्तकों और खुद मीरा वाई के ऐसे पदों से जिनके छेपक होने का संदेह नहीं है यही प्रमान मिलता है कि विष का मीरा वाई पर उलटे यह असर हुआ कि दूना नशा भगवत प्रेम का चढ़ गया, और कहते हैं कि उस विष का असर द्वारका में रनछोड जी की मूरत पर पड़ा जिसके मुँह से झाग निकलने लगा।

कथा है कि एक दिन मीरा वाई कीर्तन कर रही थीं कि ऊदा बाई पहुँचीं तो मीरा जी ने यह पद रच कर गाया "जब से मोहिं नँद नँदन दृष्टि पड़्यो माई" (देखो पद पृष्ठ २५) और कुछ ऐसी दया दृष्टि की कि ऊदा बाई के चित में इन की महिमा समा गई और इनको गुरू धारण किया। तब एक स्त्री ने राना के सामने बीड़ा उठाया कि मै मीराबाई को ठीक कर दूँगी पर उसके सामने आते ही मीरा जी ने कुछ ऐसी मौज की कि वह तन मन से उनकी दासी वन गई और राना के महल का जाना छोड़ दिया। सच है। भक्तों के दर्शन और सतसंग की ऐसी ही महिमा है जैसा कि कवीर साहिव ने कहा है—

पारस में अरु संत में, वड़ो अंतरो जान।
वह लोहा कंचन करे, यह करें आप समान॥

कहते है कि एक वार ऊदा वाई ने वड़ी दीनता और प्रेम से हठ किया कि हमको गिरधरलाल जी का प्रत्यक्ष दर्शन करा दो। मीरा बाई ने उनका सच्चा उमंग देख कर आज्ञा की कि चम्पा चमेली आदिक सहेलियों को लेकर गिरधरलाल की पहुनांई की सामग्री तैयार करो। जव सव भोग आदिक ठीक हो गया तब मीरा बाई उन लोगों के बीच में बैठ गईं और विरह और प्रेम के पद बना कर गाने लगीं। जब कई घंटे मीरा जी को कीर्तन करते बीत गये और उनकी विरह और वेकली असह हो गई तो आधी रात को श्रीकृष्ण ने साक्षात प्रकट हो कर उनको गले लगा लिया और बोले कि तुम क्यों ऐसी अधीर हो गईं, फिर सव के सामने मीरा जी के साथ भोजन करने लगे। पहरेदारों ने मर्द की आवाज सुन कर राना को सोते से जगा कर खबर दी कि मीरावाई के महल मे कोई मर्द आया है और उससे हँसी दिल्लगी हो रही। राजा क्रोध में भर कर तलवार खींचे दौड़ा और महल में घुस कर इधर उधर ढूँढने लगा, पर जब कोई पुरुष दिखाई न दिया तो खिसिया कर मीरावाई से पूछने लगा। मीराबाई बोलीं कि मेरे परम मित्र गिरधरलाल जी तो तुम्हारे आँखों के सामने विराजमान हैं मुझसे क्यों पूछते हो। राना ने चारों ओर दृष्टि फैला कर देखा पर सिवाय प्रेमी स्त्रियों के कोई दीख न पड़ा, थोड़ी देर पीछे पलँग पर वड़ा भयानक नरसिंहरूप दरसा जिसको देखते ही राना थरथरा कर भूमि पर गिर पड़ा, फिर सुधि सँभाल कर यह कहता हुआ भागा कि हमारे कुल देव एकलिंग जी हैं उनका इष्ट क्यों नहीं करतीं तुम्हारे इष्ट की तो वड़ी डरावनी सूरत है।

इन चमत्कारों को देखने पर भी राना ने अपनी हठ नहीं छोड़ी और एक दिन कई नागिन पिटारी में वन्द करके मीरावाई के पास पूजा के फूल और हार के नाम से भेजा। जब मीरावाई ने पिटारी को खोला तो शालिग्राम की मूरत और फूलों के सुगंधित हार निकले।

जब फिर भी राना उपाधि उठाता ही रहा और मीराबाई की भक्ति में विघ्न डालता रहा तब मीरा जी ने घबड़ा कर गुसाईं तुलसीदास जी को यह पद लिख कर भेजा—

श्री तुलसी सुख-निधान, दुख-हरन गुसाईं।
बारहिं बार प्रनाम करूँ, अब हरो सोक समुदाई॥
घर के स्वजन हमारे जेते, सबन उपाधि बढाई॥
साधु संग अरु भजन करत, मोहिं देत कलेस महाई॥
बालपने तें मीरा कीन्हीं, गिरधर लाल मिताई।
सो तो अब छूटत नहिं क्यों हूँ, लगी लगन बरियाई॥
मेरे मात पिता के सम हो, हरि भक्तन सुखदाई।
हम को कहा उचित करिबो है, सो लिखियो समुझाई॥

इस पत्र के उत्तर में गुसाईं तुलसीदास जी ने एक पद और एक सवैया लिख भेजे—

पद—जा के प्रिय न राम वैदेही।
तजिये ताहि कोटि वैरी सम, यद्यपि परम सनेही॥
तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषन बंधु, भरत महतारी।
बलि गुर तज्यो, कंत ब्रत-बनिता, भये सब मंगलकारी॥
नातो नेह राम सों मनियत, सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँख जो फूटे, बहुतक कहौं कहाँ लौं॥
तुलसी सो सब भाँति परम हित, पूज्य प्रान ते प्यारो।
जा सों होय सनेह राम पद, एतो मतो हमारो॥

सवैया—सो जननी सो पिता सोई भ्रात, सो भामिन सो सुत सो हित मेरो।
सोई सगो सो सखा सोई सेवक, सो गुर सो सुर साहिब चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान, कहाँ लौ बताइ कहौं बहुतेरो।
जो तजि गेह को देह को नेह, सनेह सों राम को होय सबेरो॥

इस उत्तर के पाने पर मीराबाई ने चित्तौड छोड़ने का मनसूबा पक्का किया और ऊदाबाई को आज्ञा की कि तुम यहीं बनी रहो और आप गेरुआ वस्त्र पहिन कर रात के समय चम्पा चमेली आदिक सेवकों के साथ अपने मायके मेडता को आईं। यहाँ यह बड़े आदर सत्कार से रक्खी गईं। परन्तु साधुओं के आने जाने की थोड़ी बहुत देखभाल और मुहाँचाई यहाँ भी होती रही जिससे मीरा जी का मन इस जगह भी न रुचा और कुछ दिन पीछे वृन्दावन को सिधारीं।

वृन्दावन में साधुओं और भक्तों का दर्शन करती हुई मीराबाई जीव गुसाँई के स्थान पर उनके दर्शन को गईं परन्तु जीव गुसाँईं ने उनको बाहर ही कहला भेजा कि हम स्त्रियों से नहीं मिलते। इस पर मीरा जीने जवाब दिया कि वृन्दावन में मैं सब को सखी रूप जानती थी और पुरुष केवल गिरधरलाल जी को सुना था पर आज मालूम हुआ कि उनके और भी पट्टीदार हैं। इन प्रेम रस में मिले हुए बचन को सुन कर गुसाँईं जी अति लज्जित हुए और नंगे पैर बाहर आकर मीरा जी को बड़े आदर और भाव से अपने स्थान में ले गये।

कुछ समय वृन्दावन में रह कर मीराबाई द्वारका को आईं और रनछोड़ जी के दर्शन और साधुओं की सेवा में मगन रहती थीं।

परन्तु जब से उन्होंने चित्तौड़ छोड़ा राना विक्रमाजीत पर बड़े संकट आये। गुजरात के बादशाह सुल्तान बहादुर (औवल) ने चढाई करके चित्तौड़ लूट लिया और राना ने बूँदी देश को भाग कर पनाह ली। चित्तौड़ के गद्दी पर उनके छोटे भाई उदय सिंह बैठे सो वह भी विपत पर विपत ही उठाते रहे। अब इन लोगों को मीराबाई सरीखी भक्त की महिमा जान पड़ी कि भक्तों के चरन जहाँ पधारते हैं वहाँ कष्ट और उपाधि पास नहीं फटक सकते, तब मंत्रियों की सलाह से कई प्रतिष्ठित ब्राह्मणों को इनके लिवा लाने को द्वारका भेजा। परन्तु मीराबाई ने राना और उनके मंत्रियों के दुर्मति के विचार से चित्तौड़ जाना अंगीकार न किया, तब ब्राह्मणों ने धरना दिया कि जब तक चित्तौड़ न चलोगी हम अन्न जल न छुएँगे। अन्त को मीराबाई हार मान कर और बेकल हो कर रनछोड़ जी से विदा होने के बहाने उनके मंदिर में गईं और कहते हैं कि मूरत में अलोप हो गईं, केवल उनके वस्त्र का एक छोर मूरत के मुँह से पहिचान के लिये निकला रहा। मीरा बाई के मुख से अंतिम दो पद जिनको गाकर वह रनछोड़ जी में समाई यह कहे जाते हैं—

(१) हरि तुम हरो जन की भीर॥ टेक॥
द्रोपदी की लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर॥ १॥
भक्त कारन रूप नरहरि धर्‌यो आप सरीर॥ २॥
हिरनकस्यप मारि लीन्हो धर्‌यो नाहिन धीर॥ ३॥
बूड़ते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर॥ ४॥
दास मीरा लाल गिरधर दुख जहाँ तहँ पीर॥ ५॥

(२) साजन सुध ज्यों जाने त्यों लीजे हो॥ १॥
तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरी कीजे हो॥ २॥
दिवस न भूख न रैन नहि निद्रा यों तन पल पल छीजे हो॥ ३॥
मीरा कह प्रभु गिरधर नागर मिलि बिछुरन नहिं कीजे हो॥ ४॥

पदों और भजनों के सिवाय जो समय समय परप्रेम के आवेश की दशा में मीराबाई के मुख से निकले और जो कहीं इकट्ठे नहीं मिलते नीचे लिखे हुए ग्रंथ भी उन्होंने रचे—(१) नरसी जी की मायरा, (२) गीतगोविन्द की टीका, (३) रामगोविन्द। कोई कहते हैं कि जयदेव जी के गीतगोविन्द की टीका भी मीराबाई ने बनाई थी।

मीराबाई के पद जैसे कोमल, मधुर और प्रेम रस में पगे हैं वह देखने ही से सम्बन्ध रखते हैं परन्तु उनकी बानी में लोगों ने उनके पीछे जितनी मिलौनी की है और उनके नाम से अट सट पद गढ़ लिये हैं उतनी सिवाय कबीर साहिब के दूसरे की बानी की दुर्दशा नहीं की है, फरक इतना है कि कबीर साहिब के नाम के क्षेपक भजन उन पर कोई भारी दोष नहीं लाते परन्तु मीराबाई के अनजान प्रशंसकों ने अपनी अनसमझता से जो पद मीराबाई के नाम से बनाये हैं उनसे पूरा कलंक मीराबाई पर लगता है, क्योंकि मीरा बाई के पति कुँअर भोजराज कभी राजगद्दी पर नहीं बैठे बरन अपने पिता महाराना साँगाजी के सामने ही शरीर छोड़ा और सांगा जी के पीछे मीराबाई के तीन देवर एक के बाद एक गद्दी पर बैठे। इससे विदित है कि मीराबाई राना की स्त्री नहीं कही जा सकती और यह असंभव है कि खुद मीरा बाई जी ने अपने पदों में अपने को राना की स्त्री करके लिखा हो, तो ऐसे पदों का गढ़का जिन में राना को उनका पति बनाया है और उसके लिये मीरा जी के मुख में कटुवचन रक्खे हैं मीरा बाई को स्पष्ट

गाली देना और पतिद्रोही बनाना है। इस बात के मानने के लिए प्रमान है कि मीराबाई अपने पति कुँअर भोजराज के जीवन समय में उनके साथ बड़े प्यार के साथ रहीं और उनको कभी अप्रसन्न नहीं किया, यह सब रगडे झगड़े तो जब मचे जब कि मीराबाई विधवा होकर साधु सेवा और भक्ति भाव में खुल खेलीं, तो कैसे माना जा सकता है कि उन्होंने अपने पति को निरापराध कटु बचन कहा होगा। उदाहरण के लिये कुछ ऐसी छेपक कड़ियाँ लिखी जाती है—

मीर महल सूँ उतरी राना पकर्‌यो हाथ।
हथलेवा के सायने म्हाँरे और न दूजी बात॥

म्हाँरो कहो थें मानो राना बरजै मीराबाई॥
जो तुम हाथ हमारो पकरो खबरदार मन माहीं॥
देस्यूँ स्राप साँचे मन सों जल बल भस्म होइ जाई॥
जन्म जन्म को पति परमेसुर थाँरी नहीं लुगाई॥
थाँरो म्हाँरो झूठो सनेसो गावै मीराबाई॥

हमको इस प्रकार के और दूसरे मिलौनी पदों के छाँट कर निकालने में कठिनता हुई है और फिर भी हम पूरे विश्वास से नहीं कह सकते कि जो कुछ हम चुन कर छाप रहे हैं वह स्वच्छ बानी मीराबाई की है। आशा है कि प्रेमी और रसिक जन हमारी भूलों को क्षमा की दृष्टि से देखेंगे।

यहाँ इस बात के जता देने की आवश्यकता है कि मीराबाई संस्कृत भी जानती थीं और देश देशान्तर के साधुओं के समागम से ब्रजभाषा और पूरबी बोली भी अच्छी तरह समझती और लिख पढ सकती थीं इस लिये उनके कोई कोई शब्द जो उन बोलियों मे हैं उन्हें केवल इसी कारण से छेपक न मान लेना चाहिये॥

॥ सूचीपत्र ॥

सूचना

भक्त जनों से प्रार्थना है कि सन्तों की असली तस्वीरें यदि मिल सकें तो इस पते पर पत्र व्यवहार करें—

उन तस्वीरों की जाँच करके छापी जायेगी और जो सज्जन भेजेंगे उनका नाम भी छापेंगे।

मैनेजर

संतबानी पुस्तकमाला, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

आवश्यक सूचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं—

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, झूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',-भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर विलास
पलटू साहिब भाग १ कुण्डलियाँ। भाग २ रेखते, झूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ।
जगजीवन साहब—२ भागों मे
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों मे

गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी',—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अंग्रेजी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ मे नहीं छपे है मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इस कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या खर्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलविडियर प्रेस, प्रयाग।

मीरा बाई की शब्दावली

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

जग में जीवणा थोड़ा, राम कुण[1] कह रे जंजार[2] ॥ टेक ॥
मात पिता तो जन्म दियो है, करम दियो करतार ॥ १ ॥
कइ रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइ रे कियो उपकार ॥ २ ॥
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरो भवपार ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

मनखा[3] जनम पदारथ पायो, ऐसी बहुर न आती ॥ टेक ॥
अब के मोसर[4] ज्ञान बिचारो, राम राम मुख गाती ।
सतगुरु मिलिया सुंज[5] पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती ॥ १ ॥
सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती ।
मगन भया मेरा मन सुख में, गोबिंद का गुण गाती ॥ २ ॥

कहा भयो है भगवा पहर्‌याँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगति नहिँ जानी, उलटि जनम फिर आसी ॥ ३ ॥
अरज करौँ अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम की फाँसी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

भज ले रे मन गोपाल गुणा ॥ टेक ॥
अधम तरे अधिकार भजन सूँ, जोइ आये हरि की सरणा।
अबिस्वास तो साखि बताऊँ, अजामेल गणिका सदना ॥ १ ॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना।
जा को रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना ॥२॥
बालापन सब खेल गँवाया, तरुन भयो जब रूप घना।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना ॥३॥
गज अरु गीदहु तरे भजन सूँ, कोऊ तर्‌यौ नहिँ भजन बिना।
धना भगत पीपा पुनि सेवरी, मीरा की हूँ करो गनना ॥४॥

उपदेश का अंग

॥ शब्द १ ॥

मन रे परसि हरि के चरण ॥ टेक ॥
सुभग सीतल कँवल कोमल, त्रिबिधि ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रहलाद परसे, इंद्र पदवी धरण ॥ १ ॥
जिण चरण ध्रुव अटल कीणे, राखि अपणी सरण।
जिण चरण ब्रह्मांड भेट्यो, नख सिख सिरी धरण ॥ २ ॥
जिण चरण प्रभु परसि लीणो, तरी गोतम घरण[१]।
जिण चरण काली नाग नाथ्यो, गोपि लीला करण ॥ ३ ॥
जिण चरण गोबरधन धार्‌यो, इंद्र को गर्व हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारण तरण ॥ ४ ॥

(१) घरवाली, स्त्री।

॥ शब्द २ ॥

राम नाम रस पीजे मनुआँ, राम नाम रस पीजे ॥ टेक ॥
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ, चित से बहाय दीजे ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भीँजे ॥ ३ ॥

बिरह और प्रेम का अंग

॥ शब्द १ ॥

माई म्हाँरी हरि न बूझी बात ।
पिंड में से प्राण पापी, निकस क्यूँ नहिँ जात ॥ १ ॥
रैण अँधेरी बिरह घेरी, तारा गिणत निस जात ।
ले कटारी कंठ चीरूँ, करूँगी अपघात ॥ २ ॥
पाट[1] न खोल्या मुखाँ न बोल्या, साँझ लग परभात ।
अबोलना में अवध बीती, काहे की कुसलात ॥ ३ ॥
सुपन में हरि दरस दीन्हों, मैं न जाण्यो हरि जात ।
नैन म्हाँरा उघड़ि[2] आया, रही मन पछतात ॥ ४ ॥
आवण आवण होय रह्यो रे, नहिँ आवण की बात ।
मीरा व्याकुल बिरहनी रे, बाल ज्यों बिललात ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

घड़ी एक नहिँ आवड़े[3], तुम दरसण बिन मोय ।
तुम हो मेरे प्राण जी, का सूँ जीवण होय ॥ टेक ॥
धान[4] न भावे नींद न आवे, बिरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ रे, मेरा दरद न जाणे कोय ॥ १ ॥
दिवस तो खाय गमायो रे, रैण गमाई सोय ।
प्राण गमायो झूरताँ[5] रे, नैण गमाई रोय ॥ २ ॥
जो मैं ऐसा जाणती रे, प्रीत किये दुख होय ।
नगर ढँढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोय ॥ ३ ॥

(१) परदा । (२) खुल गया । (३) सोहावै । (४) अन्न । (५ तरस तरस कर ।।

पंथ निहारूँ डगर बुहारूँ, ऊबी[1] मारग जोय।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, तुम मिलियाँ सुख होय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय ॥ टेक ॥
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोणा होय।
गगन मँडल पै सेज पिया की, किस बिध मिलणा होय ॥ १ ॥
घायल की गति घायल जाने, की जिन लाई होय।
जौहरी की गत जौहरी जानै, की जिन जौहर होय ॥ २ ॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ, बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद सँवलिया होय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ४ ॥

नींदलड़ी नहिं आवै सारी रात, किस बिध होइ परभात[2] ॥ टेक ॥
चमक[3] उठी सुपने सुध भूली, चंद्र कला न सोहात ॥ १ ॥
तलफ तलफ जिव जाय हमारो, कब रे मिले दीना-नाथ ॥ २ ॥
भई हुँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हारी बात ॥ ३ ॥
मीरा कहै बीती सोइ जानै, मरण जीवण उन हाथ ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

जोगिया ने[4] कहियो रे आदेस।
आऊँगी मैं नाहिं रहूँ रे, कर जटाधारी भेस ॥ १ ॥
चीर को फाड़ूँ कंथा[5] पहिरूँ, लेऊँगी उपदेस।
गिणते गिणते घिस गई रे, मेरी उँगलियों की रेख ॥ २ ॥
मुद्रा माला भेप लूँ रे, खप्पड़ लेऊँ हाथ।
जोगिन होय जग ढूँढ़सूँ रे, रावलिया के साथ ॥ ३ ॥
प्राण हमारा वहाँ वसत है, यहाँ तो खाली खोड़[6]।
मात पिता परिवार सूँ रे, रही तिनका तोड़ ॥ ४ ॥

(१) खड़ी हुई। (२) सबेरा। (३) चौंक। (४) से। (५) मेखला। (६) खोल, देह।

पाँच पचीसो बस किये, मेरा पल्ला न पकड़ै कोय ।
मीरा व्याकुल बिरहिनी, कोइ आन मिलावै मोय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नैणा मोरे बाण पड़ी, साईं मोहिं दरस दिखाई ॥ टेक ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कैसे प्राण पिया बिनु राखूँ, जीवण मूर जड़ी[1] ॥ २ ॥
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपणे भवन खड़ी ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु के हाथ बिकानी, लोक कहे बिगड़ी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

मैं हरि बिन क्योँ जिऊँ री माय ॥ टेक ॥
पिय कारन बौरी भई, जस काठहि घुन खाय ।
औषध मूल न संचरै, मोहिं लागो बौराय[2] ॥ १ ॥
कमठ दादुर बसत जल महँ, जलहि तें उपजाय ।
मीन जल के बीछुरे तन, तलफि के मरि जाय ॥ २ ॥
पिय ढूँढ़न बन बन गई, कहुँ मुरली धुनि पाय ।
मीरा के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मैं अपने सैयाँ सँग साँची ।
अब काहे की लाज सजनी, प्रगट ह्वै नाची ॥ १ ॥
दिवस भूख न चैन कबहिन, नींद निसु नासी ।
बेध वार को पार ह्वैगो, ज्ञान गुह[3] गाँसी ॥ २ ॥
कुल कुटुम्ब सब आनि बैठे, जैसे मधु मासी[4] ।
दास मीरा लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

ऐसे पिया जान न दीजे हो ॥ टेक ॥
चलो री सखी मिलि राखि के, नैना रस पीजे हो ॥ १ ॥
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखे जीजे हो ॥ २ ॥

---

(१) बूटी । (२) बौरापन । (३) गुप्त । (४) शहद की मक्खी ।

जोइ जोइ भेष सोँ हरि मिलैँ, सोइ सोइ भल कीजे हो ॥ ३ ॥
मीरा के गिरधर प्रभु, बड़ भागन रीझे हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

यहि बिधि भक्ति कैसे होय ।
मन की मैल हिय तेँ न छूटी, दियो तिलक सिर धोय ॥ १ ॥
काम कूकर लोभ डोरी, बाँधि मोहिँ चंडाल ।
क्रोध कसाई रहत घट मेँ, कैसे मिलै गोपाल ॥ २ ॥
बिलार[1] बिषया लालची रे, ताहि भोजन देत ।
दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत ॥ ३ ॥
आपहि आप पुजाय के रे, फूले अंग न समात ।
अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहाँ ठहरात ॥ ४ ॥
जो तेरे हिये अंतर की जानै, ता सोँ कपट न बनै ।
हिरदे हरि को नाम न आवै, मुख तेँ मनिया[2] गनै ॥ ५ ॥
हरी हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग ।
दास मीरा लाल गिरधर, सहज कर बैराग ॥ ६ ॥

॥ शब्द ११ ॥

हमरे रौरे लागलि कैसे छूटै ॥ टेक ॥
जैसे हीरा हनत निहाई । तैसे हम रौरे बनि आई ॥ १ ॥
जैसे सोना मिलत सोहागा । तैसे हम रौरे दिल लागा ॥ २ ॥
जैसे कमल नाल बिच पानी । तैसे हम रौरे मन मानी ॥ ३ ॥
जैसे चंदहि मिलत चकोरा । तैसे हम रौरे दिल जोरा ॥ ४ ॥
जैसे मीरा पति गिरधारी । तैसे मिलि रहु कुंज बिहारी ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

स्याम तेरी आरति लागी हो ।
गुरु परतापे पाइया तन दुरमति भागी हो ॥ १ ॥

(१) बिलाव । (२) माला के दाने ।

या तन को दियना करौं मनसा करौं बाती हो।
तेल भरावौं प्रेम का बारौं दिन राती हो ॥ २ ॥
पाटी पारौं ज्ञान की मति माँग सँवारौं हो।
तेरे कारन साँवरे धन जोबन वारौं हो ॥ ३ ॥
यह सेजिया बहु रंग की बहु फूल बिछाये हो।
पंथ मैं जोहौं[1] स्याम का अजहूँ नहिं आये हो ॥ ४ ॥
सावन भादौं ऊमड़ो बरषा रितु आई हो।
भौंह घटा घन घेरि के नैनन झरि लाई हो ॥ ५ ॥
मात पिता तुम को दियो तुम हीं भल जानो हो।
तुम तजि और भतार को मन में नहिं आनौं हो ॥ ६ ॥
तुम प्रभु पूरन ब्रह्म हो पूरन पद दीजै हो।
मीरा ब्याकुल बिरहनी अपनी करि लीजै हो ॥ ७ ॥

॥ शब्द १३ ॥

आली साँवरो कि दृष्टि, मानो प्रेम की कटारी है ॥ टेक ॥
लागत बेहाल भई तन की सुधि बुद्धि गई,
तन मन ब्यापो प्रेम मानो मतवारी है ॥ १ ॥
सखियाँ मिलि दुइ चारी बावरी सी भई न्यारी,
हौं[2] तो वा को नीके जानौं कुंज को बिहारी है ॥ २ ॥
चंद को चकोर चाहै दीपक पतंग दाहै,
जल बिना मीन जैसे तैसे प्रीत प्यारी है ॥ ३ ॥
बिनती करौं हे स्याम लागौं मैं तुम्हारे पाम[3],
मीरा प्रभु ऐसे जानो दासी तुम्हारी है ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

सखी री लाज बैरन भई ॥ १ ॥
श्री लाल गोपाल के सँग काहे नाहीं गई ॥ २ ॥

---

(१) ढूँढ़ रही हूँ। (२) मैं। (३) पाँव।

कठिन क्रूर अक्रूर आयो साजि रथ कहँ नई ॥ ३ ॥
रथ चढ़ाय गोपाल लै गो हाथ मीँजत रही ॥ ४ ॥
कठिन छाती स्याम बिछुरत बिरह तेँ तन तई ॥ ५ ॥
दास मीरा लाल गिरधर बिखर क्योँ ना गई ॥ ६ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मेरो मन बसि गो गिरधर लाल सोँ ॥ टेक ॥
मोर मुकुट पीताम्बरो गल बैजन्ती माल ।
गउवन के सँग डोलत हो जसुमति को लाल ॥ १ ॥
कालिंदी के तीर हो कान्हा गउवाँ चराय ।
सीतल कदम की छाहियाँ हो मुरली बजाय ॥ २ ॥
जसुमति के दुवरवाँ ग्वालिन सब जाय ।
बरजहु आपन दुलरुवा हम सोँ अरुझाय ॥ ४ ॥
बृन्दाबन क्रीड़ा करै गोपिन के साथ ।
सुर नर मुनि सब मोहे हो ठाकुर जदुनाथ ॥ ४ ॥
इन्द्र कोप घन बरखो मूसल जल धार ।
बूड़त बृज को राखेऊ मोरे प्रान - अधार ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर हो सुनिये चित लाय ।
तुम्हरे दरस की भूखी हो मोहिँ कछु न सोहाय ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

सखी री मैँ तो गिरधर के रँग राती ॥ टेक ॥
पचरँग मेरा चोला रँगा दे, मैँ झुरमट[१] खेलन जाती ।
झुरमट मेँ मेरा साईँ मिलेगा, खोल अडम्बर गाती[२] ॥ १ ॥
चंदा जायगा सूरज जायगा, जायगा धरण अकासी ।
पवन पाणी दोनोँ ही जायँगे, अटल रहे अविनासी ॥ २ ॥

---

(१) एक खेल जिसमें स्त्रियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़ कर घूमती हैं। (२) मनोराज का [illegible] शरीर पर [illegible] रक्खा है। (३) हाट=दूकान।

सुरत निरत का दिवला सँजो ले, मनसा की कर बाती ।
प्रेम हटी[1] का तेल बना ले, जगा करे दिन राती ॥ ३ ॥
जिन के पिय परदेस बसत हैं, लिखि लिखि भेजें पाती ।
मेरे पिय मो माहिँ बसत हैं, कहूँ न आती जाती ॥ ४ ॥
पीहर बसूँ न बसूँ सास घर, सतगुरु सब्द सँगाती ।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरा हरि रँग राती ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

नातो[2] नाम को मो सूँ तनक न तोड़्यो जाय ॥ टेक ॥
पानाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग ।
छाने[3] लाँघन[4] मैं किया रे, राम मिलण के जोग ॥ १ ॥
बाबल[5] बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हाँरी बाँह[6] ।
मूरख बैद मरम नहिँ जाणे, करक[7] कलेजे माँह ॥ २ ॥
जाओ बैद घर आपणे रे, म्हाँरो नाँव न लेय ।
मैं तो दाधी[8] बिरह की रे, काहे कूँ औषद[9] देय ॥ ३ ॥
माँस गलि गलि छीजिया रे, करक रह्या गल आहि[10] ।
आँगुलियाँ की मूँदड़ी, म्हारे आवण लागी बाँहि ॥ ४ ॥
रहु रहु पापी पपिहरा रे, पिव को नाम न लेय ।
जे कोइ बिरहन साम्हले[11], तो पिव कारण जिव देय ॥ ५ ॥
खिण मन्दिर खिण आँगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होय ।
घायल ज्यूँ घूमूँ खड़ी, म्हाँरी बिथा न बूझै कोय ॥ ६ ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूँ रे, कौवा तू ले जाय ।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै रे, वे देखत तू खाय ॥ ७ ॥
म्हाँरे नातो नाम को रे, और न नातो कोय ।
मीरा व्याकुल बिरहनी रे, पिय दरसण दीज्यो मोय ॥ ८ ॥

---

(१) हाट = दूकान । (२) रिश्ता । (३) छिप कर । (४) फाका । (५) बाप । (६) नाड़ी । (७) दर्द । (८) जली हुई । (९) दवा । (१०) हाड़ । (११) सुन पावै ।

॥ शब्द १८ ॥

तेरा कोइ नहिँ रोकनहार, मगन होय मीरा चली ॥ टेक ॥
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटके, निकली हूँ ज्ञान गली ॥ १ ॥
ऊँची अटरिया लाल किवड़िया, निरगुन सेज बिछी ।
पचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली ॥ २ ॥
बाजूबंद कडूला सोहै, माँग सेँदूर भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा, सोभा अधिक भली ॥ ३ ॥
सेज सुखमणा मीरा सोवे, सुभ है आज घरी ।
तुम जावो राणा घर अपणे, मेरी तेरी नाहिँ सरी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

बंसीवारो आयो म्हाँरे देस, थाँरी साँवरी सुरत वाली बैस[१] ॥टेक॥
आऊँ जाऊँ कर गया साँवरा, कर गया कौल[२] अनेक ।
गिणते गिणते घिस गइँ उँगली, घिस गइ उँगली की रेख ॥ १ ॥
मैं बैरागिण आदि की, थाँरे म्हाँरे कद[३] को सनेस[४] ।
बिन पाणी बिन साबुन साँवरा, हुइ गइ धुई सपेद ॥ २ ॥
जोगिण हुइ जंगल सब हेरूँ, तेरा न पाया भेस ।
तेरी सुरत के कारणे, धर लिया भगवा भेस[५] ॥ ३ ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहै, घूँघर वाला केस ।
मीरा को प्रभु गिरधर मिल गये, दूणा बढ़ा सनेस[४] ॥ ४ ॥

॥ शब्द २० ॥

ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी ॥ टेक ॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, तलफ तलफ जिय जासी ॥ १ ॥
तेरे खातर[६] जोगण[७] हूँगी, करवत[८] लूँगी कासी ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी ॥ ३ ॥

---

(१) कम उमर। (२) करार। (३) कब। (४) सनेह। (५) लँगोट पहिरन वाले यानी मनुष्यों का भेष। (६) वास्ते। (७) जोगिन। (८) करवत आरी को कहते हैं—मशहूर है कि काशी में एक स्थान पर आरी लगी थी जिस पर गला काट देने से लोग समझते थे कि स्वर्ग में तुरत भेजा हो जाता है।

॥ शब्द २१ ॥

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई ॥ टेक ॥
तेरेहि कारण जोग लियो है, घर घर अलख जगाई ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैन नहिँ निद्रा, तुझ बिन कुछ न सुहाई ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल कर तपत बुझाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द २२ ॥

मेरे परम सनेही राम की, नित ओलूँड़ी[१] आवे ॥ टेक ॥
राम हमारे हम हैँ राम के, हरि बिन कुछ न सुहावे ॥ १ ॥
आवण कह गये अजहु न आये, जिवड़ो अति उकलावे ॥ २ ॥
तुम दरसण की आस रमइया, निस दिन चितवत जावे ॥ ३ ॥
चरण कँवल की लगन लगी अति, बिन दरसण दुख पावे ॥ ४ ॥
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्हा, आनँद बरणयो न जावे ॥ ५ ॥

॥ शब्द २३ ॥

चलो अगम के देस काल देखत डरे ।
वहँ भरा प्रेम का हौज हंस केलाँ करे ॥ टेक ॥
ओढ़न लज्जा चीर धीरज को घाघरो ।
छिमता[२] काँकण[३] हाथ सुमत को मुन्दरो[३] ॥ १ ॥
काँचो है बिस्वास चूड़ो चित ऊजलो ।
दिल दुलड़ी[३] दरियाव साँच को दोवड़ो[३] ॥ २ ॥
दाँतों अमृत मेख[४] दया को बोलणो ।
उबटन गुरु को ज्ञान ध्यान को धोवणो ॥ ३ ॥
कान[३] अखोटा[५] ज्ञान जुगत को झूठणो[३] ।
बेसर[३] हरि को नाम काजल है धरम को ॥ ४ ॥
जौहर[३] सील सँतोष निरत को घूँघरो[३] ।
बिँदली[३] गज[३] और हार[३] तिलक गुरु ज्ञान को ॥ ५ ॥

---

(१) याद । (२) छिमा । (३) नाम गहने का । (४) चोंप । (५) अविनाशी ।

सज सोलह सिंगार पहिरि सोने राखड़ी[1] ।
साँवलिया सूँ प्रीत औरों से आखड़ी[2] ॥ ६ ॥
पतिब्रता की सेज प्रभू जी पधारिया ।
गावे मीरा बाई दासी कर राखिया ॥ ७ ॥

॥ शब्द २४ ॥

कूण बाँचे पाती, बिन प्रभु कूण बाँचे पाती ॥ टेक ॥
कागद ले ऊधो जी आये, कहाँ रहे साथी ।
आवत जावत पाँव घिसा रे (बाला) अँखियाँ भई राती[3] ॥ १ ॥
कागद ले राधा बाँचण बैठी, भर आई छाती ।
नैन नीरज[4] में अंब[5] बहै रे (बाला), गंगा बहि जाती ॥ २ ॥
पाना[6] ज्यूँ पीली पड़ी रे (बाला), अन्न नहिँ खाती ।
हरि बिन जिवड़ो यूँ जलै रे (बाला), ज्यूँ दीपक सँग बाती ॥ ३ ॥
साँचा कुछ चकोर चंदा, झोलै[7] बहि जाती ।
ब्रज नारी की बीनती रे (बाला), राम मिले मिल जाती ॥ ४ ॥
मनै[8] भरोसो राम को रे (बाला), डूबत तार्‌यो हाथी ।
दास मीरा लाल गिरधर, साँकड़ारो[9] साथी ॥ ५ ॥

॥ शब्द २५ ॥

वैद को सारो[10] नाहीँ रे माई, वैद को नहिँ सारो ॥ टेक ॥
कहत ललिता[11] वैद बुलाऊँ, आवै नंद को प्यारो ।
वो आयाँ दुख नाहिँ रहैगो, मोहिँ पतियारो[12] ॥ १ ॥
वैद आयकर हाथ जो पकड़्यो, रोग है भारो ।
परम पुरुष की लहर व्यापी, डस गयो कारो ॥ २ ॥
मोर चंदो[13] हाथ ले, हरि देत है डारो ।
दासी मीरा लाल गिरधर, विष कियो न्यारो ॥ ३ ॥

---

(१) नाम गहने का । (२) दूरी । (३) लाल । (४) कँवल । (५) पानी । (६) पान (७) झोंका (८) मुझको । (९) सकट में । (१०) बस । (११) नाम सखी का । (१२) भरोसा (१३) मोर का पंख ।

॥ शब्द २६ ॥

कैसे जिऊँ री माई, हरि बिन कैसे जिऊँ री ॥ टेक ॥
उदक[1] दादुर[2] पीनवत[3] है, जल से ही उपजाई ।
पल एक जल कूँ मीन बिसरै, तलफत मर जाई ॥ १ ॥
पिया बिना पीली भई रे (बाला), ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै[4] रे (बाला), बैद फिर जाई ॥ २ ॥
उदासी होय बन बन फिरूँ रे, बिथा तन छाई ।
दास मीरा लाल गिरधर, मिल्या है सुखदाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द २७ ॥

बड़े घर ताली[5] लागी रे, म्हाँरा मन री उणारथ[6] भागी रे ॥ टेक ॥
छीलरिये[7] म्हाँरो चित नहीं रे, डाबरिये[8] कुण जाव ।
गंगा जमुना सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूँ दरियाव[9] ॥ १ ॥
हाल्याँ मोल्याँ[10] सूँ काम नहीं रे, सीख[11] नहीं सरदार ।
कामदाराँ[12] सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब[13] करूँ दरबार ॥ २ ॥
काच कथीर सूँ काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार ।
सोना रूपा सूँ काम नहीं रे, म्हाँरे हीराँ रो बोपार[14] ॥ ३ ॥
भाग हमारो जागियो रे, भयो समँद[15] सूँ सीर[16] ।
अमृत प्याला छाँड़ि कै, कुण पीवै कड़वो नीर ॥ ४ ॥
पीपा[17] कूँ प्रभु परच्यौ[18] दीन्हो, दिया रे खजीना[19] पूर ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, धणी[20] मिल्या छै[21] हजूर ॥ ५ ॥

॥ शब्द २८ ॥

यो तो रँग धत्ताँ[22] लग्यो ए माय ॥ टेक ॥
पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूम घुमाय[23] ।

---

(१) पानी । (२) मेढक । (३) मोटा । (४) फायदा न करे । (५) लगन । (६) कामना । (७) छिछला तालाव । (८) छोटा गढ़ा पानी का । (९) समुद्र । (१० मवाली । (११) नसीहत । (१२) कारपरदाज अफसर । (१३) जब = जवाब, अ कि मुझे राज के अधिकारियों से प्रयोजन नहीं सीधे राजा से बात करूँगी । (१४ राँगा, लोहा, चाँदी सोने का व्यौपार नहीं करती बल्कि हीरे का । (१५) समु मेल । (१७) एक भक्त का नाम । (१८) परचा । (१९) खजाना । (२०) खाविन्द (२१) है । (२२) खूब । (२३) जोर का नशा ।

यो तो अमल म्हाँरो कबहु न उतरे, कोट करो न उपाय ॥ १ ॥
साँप टिपारो[1] राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़ तणी[2] गल डार ।
हँस हँस मीरा कंठ लगायो, ये तो म्हाँरे नौसर हार[3] ॥ २ ॥
बिष को प्यालो राणा जी मेल्यो, द्यो मेड़तणी ने पाय ।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोबिंद रा गाय ॥ ३ ॥
पिया पियाला नाम का रे, और न रंग सोहाय ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रँग उड़ जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

तुम्हरे कारण सब सुख छोड़या, अब मोहिं क्यूँ तरसावो ॥ १ ॥
बिरह बिथा[4] लागी उर अंदर, सो तुम आय बुझावो ॥ २ ॥
अब छोड़याँ नहिं बनै प्रभू जी, हँस कर तुरत बुलावो ॥ ३ ॥
मीरा दासी जनम जनम की, अंग सूँ अंग लगावो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३० ॥

प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
जल बिन कँवल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी ।
याकुल व्याकुल फिरूँ रैण दिन, बिरह कलेजो खाय ॥ १ ॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैणा, मुख सूँ कथत न आवे बैणा ।
कहा कहूँ कुछ कहत न आवे, मिलकर तपत बुझाय ॥ २ ॥
क्यूँ तरसावो अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी ।
मीरा दासी जनम जनम की, परी तुम्हारे पाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

मैं तो म्हाँरा रमैया ने, देखबो करूँ री ॥ टेक ॥
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण, तेरो ही ध्यान धरूँ री ॥ १ ॥
जहाँ जहाँ पाँव धरूँ धरणी पर, तहाँ तहाँ निरत करूँ री ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ लिपट परूँ री ॥ ३ ॥

(१) पिटारी। (२) मीराबाई। (३) नौ लड़ी का हार। (४) पीड़ा रूपी अग्नि।

॥ शब्द ३२ ॥

साजन घर आवो मीठा बोला[१] ॥ टेक ॥
कब की खड़ी खड़ी पंथ निहारूँ, थाँहीं आया होसी भला ॥१॥
आवो निसंक संक मत मानो, आयाँही सुख रहला ॥२॥
तन मन वार करूँ न्योछावर, दीजो स्याम मोहेला ॥३॥
आतुर बहुत बिलम नहिं करणा, आयाँही रंग रहेला ॥४॥
तेरे कारण सब रँग त्यागा, काजल तिलक तमोला[२] ॥५॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत है, कर धर रही कपोला[३] ॥६॥
मीरा दासी जनम जनम की, दिल की घुंडी खोला ॥७॥

॥ शब्द ३३ ॥

पिया इतनी बिनती सुण मोरी, कोइ कहियो रे जाय ॥ टेक ॥
औरन सूँ रस बतियाँ करत हो, हम से रहे चित चोरी ॥१॥
तुम बिन मेरे और न कोई, मैं सरणागत तोरी ॥२॥
आवण कह गये अजहुँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ॥३॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, अरज करूँ कर जोरी ॥४॥

॥ शब्द ३४ ॥

पिया अब घर आज्यो मोरे, तुम मोरे हूँ[४] तोरे ॥टेक॥
मैं जन[५] तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ॥१॥
अवध[६] बदीती[७] अजहुँ न आये, दुतियन[८] सूँ नेह जोरे ॥२॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, दरसन बिन दिन दोरे[९] ॥३॥

॥ शब्द ३५ ॥

जोगिया री प्रीतड़ी[१०] है, दुखड़ा[११] री मूल ॥ टेक ॥
हिल मिल बात बनावत मीठी, पीछे जावत भूल ॥१॥
तोड़त जेज[१२] करत नहिं सजनी, जैसे चमेली[१३] के फूल ॥२॥
मीरा कहै प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लगत हिवड़ा में सूल ॥३॥

---

(१) मीठा बोलने वाला। (२) पान। (३) गाल पर हाथ रखना सोच का निशान है (४) मैं। (५) भक्त, दास। (६) समय, वादा। (७) बीता। (८) दूसरे। (९) कठिन (१०) प्रीत। (११) दुख। (१२) देर। (१३) चमेली।

॥ शब्द ३६ ॥

प्रेम नी[1] प्रेम नी प्रेम नी रे, मन लागी कटारी प्रेम नी रे ॥टेक॥
जल जमुना माँ भरबा गया ताँ, हती गागर माथे हेम नी रे[2] ॥१॥
कँचे ते ताँत ने हरिजीये बाँधी, जेम खेचे तेमनी रे[3] ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साँवली सुरत सुभ एमनी[4] रे ॥३॥

॥ शब्द ३७ ॥

जोगी मत जा मत जा मत जा, पाय परूँ मैं चेरी तेरी हौं ॥टेक॥
प्रेम भगति को पैंड़ो[5] ही न्यारो, हम कूँ गैल[5] बता जा ॥१॥
अगर चंदन की चिता रचाऊँ, अपणे हाथ जला जा ॥२॥
जब जल भई भसम की ढेरी, अपने अंग लगा जा ॥३॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा ॥४॥

॥ शब्द ३८ ॥

जोगिया री सूरत मन में बसी ॥टेक॥
नित प्रति ध्यान धरत हूँ दिल में, निस दिन होत ख़ुसी[6] ॥१॥
कहा करूँ कित जाउँ मोरी सजनी, मानो सरप डसी ॥२॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीत रसीली बसी ॥३॥

॥ शब्द ३९ ॥

पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिखिही न जाई ॥ टेक ॥
कलम भरत मेरे कर कंपत, हिरदो रहो घर्राई ॥ १ ॥
बात कहूँ मोहिं बात न आवे, नैण रहे झर्राई ॥ २ ॥
किस विधि चरण कमल मैं गहिहौं, सबहि अंग थर्राई ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सब ही दुख बिसराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४० ॥

देखो सइयाँ हरि मन काठ कियो ॥ टेक ॥
आवन कहि गयो अजहुँ न आयो, करि करि वचन गयो ॥ १

(१) की। (२) मैं सोने का घड़ा सिर पर धर कर जल भरने जमुना को गई (३) हरि ने कच्चे धागे अर्थात प्रीति की डोरी से मुझे बाँध लिया और जहाँ चाहें लिये जाते हैं। (४) इनकी। (५) राह। (६) खुशी।

खान पान सुध बुध सब बिसरी, कैसे करि मैं जियों ॥ २ ॥
बचन तुम्हारे तुमहिं बिसारे, मन मेरो हर लियो ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४१ ॥

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी ॥ टेक ॥
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ॥ १ ॥
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी ॥ २ ॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ॥ ३ ॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी ॥ ४ ॥
ऐसा बैद मिले कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ॥ ५ ॥
तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नाहं भरमों खानी ॥ ६ ॥
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ॥ ७ ॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी ॥ ८ ॥
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ॥ ९ ॥
मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ॥ १० ॥

॥ शब्द ४२ ॥

आली रे मेरे नैनन बान पड़ी ॥ टेक ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी सूरत, उर बिच आन अड़ी ॥ १ ॥
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी ॥ २ ॥
कैसे प्रान पिया बिन राखूँ, जीवन मूल जड़ी ॥ ३ ॥
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४३ ॥

जाओ हरि निरमोहड़ा[1] रे, जाणी थाँरी प्रीत ॥ टेक ॥
लगन लगी जब और प्रीत छी[2], अब कुछ अँवली[3] रीत ॥ १ ॥
अमृत पाय बिषै क्यूँ दीजे, कौण गाँव की रीत ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, आप गरज के मीत ॥ ३ ॥

(१) निर्मोही । (२) थी । (३) उलटी ।

॥ शब्द ४४ ॥

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी, थाँरी सूरत देखि लुभानी ॥ टेक ॥
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो, मैं हूँ बिरह दिवानी ॥ १ ॥
रात दिवस कल नाहिँ परत है, जैसे मीन बिन पानी ॥ २ ॥
दरस बिना मोहिँ कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जानी ॥ ३ ॥
मीरा तो चरणन की चेरी, सुन लीजे सुखदानी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४५ ॥

मेरे प्रीतम प्यारे राम ने[1] लिख भेजूँ री पाती ॥ टेक ॥
स्याम सनेसो कबहुँ न दीन्हो, जान बूझ गुझ[2] बाती ॥ १ ॥
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती[3] ॥ २ ॥
तुम देख्याँ बिन कल न परत है, हियो फटत मोरी छाती ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, पूर्व जनम के साथी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४६ ॥

स्याम को सँदेसो आयो, पतियाँ लिखाय माय ॥ टेक ॥
पतियाँ अनूप आई, छतियाँ लगाय लीनी ।
अचल की दे दे ओट, ऊधो पै बँचाई[4] है ॥ १ ॥
बाल की जटा बनाऊँ, अंग तो भभूत लाऊँ ।
फाड़ूँ चीर पहरूँ कंथा[5], जोगण बण जाऊँगी ॥ २ ॥
इन्द्र के नगारे बाजे, बादल की फौज आई ।
तोपखाना पेस - खाना,[6] उतरा आय बाग में ॥ ३ ॥
मथुरा उजाड़ कीन्ही, गोकुल बसाय लीन्ही ।
कुबजा सूँ बाँध्यो हेत, मीरा गाय सुनाई है ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४७ ॥

गोविंद कबहुँ मिले पिया मेरा ॥ टेक ॥
चरन कमल को हँस करि देखोँ, राखोँ नैनन नेरा ॥ १ ॥

---

(१) को । (२) गुप्त । (३) लाल । (४) पढ़ाई । (५) जोगियों के पहिनने का मेखला । (६) पेश खेमा ।

निरखन की मोहिँ चाव घनेरी, कब देखौं मुख तेरा ॥ २ ॥
व्याकुल प्रान धरत नहिँ धीरज, मिल तूँ मीत सबेरा ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, ताप तपन बहुतेरा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४८ ॥

सखी मेरी नीँद नसानी हो ।
पिया को पंथ निहारते, सब रैन बिहानी हो ॥ १ ॥
सखियन मिल के सीख दई, मन एक न मानी हो ।
बिन देखे कल ना परे, जिय ऐसी ठानी हो ॥ २ ॥
अंग छीन व्याकुल भई, मुख पिय पिय बानी हो ।
अंतर वेदन[1] बिरह की, वह पीर न जानी हो ॥ ३ ॥
ज्योँ चातक घन को रटे, मछरी जिमि पानी हो ।
मीरा व्याकुल बिरहनी, सुध बुध बिसरानी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४९ ॥

भर मारी रे बानाँ[2] मेरे सतगुरु बिरह लगाय के ॥ टेक ॥
पावन पंगा कानन बहिरा, सूझत नाहीँ नैना ॥ १ ॥
खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूँ, मरम न कोई जाना ॥ २ ॥
सतगुरु औषद ऐसी दीन्ही, रूम रूम[3] भइ चैना ॥ ३ ॥
सतगुरु जस्या[4] बैद न कोई, पूछो बेद पुराना ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अमर लोक में रहना ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५० ॥

वारी वारी हो राम हूँ वारी तुम आज्यो[5] गली हमारी ॥ टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जोऊँ बाट तुमारी ॥ १ ॥
कूण सखी सूँ तुम रँग राते, हम सूँ अधिक पियारी ॥ २ ॥
किरपा कर मोहिँ दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी ॥ ३ ॥
तुम सरणागत परम दयाला, भवजल तार मुरारी ॥ ४ ॥
मीरा दासी तुम चरणन की, वार वार बलिहारी ॥ ५ ॥

(१) तकलीफ । (२) तीर । (३) रोम रोम । (४) जैसा । (५) आओ ।

॥ शब्द ५१ ॥

मैं बिरहिन बैठी जागूँ, जगत सब सोवै री आली ॥ टेक ॥
बिरहिन बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पोवै ।
इक बिरहिन हम ऐसी देखी, अँसुअन की माला पोवै ॥ १ ॥
तारा गिण गिण रैन बिहानी, सुख की घड़ी कब आवै ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल के बिछुड़ न जावै ॥ २ ॥

॥ शब्द ५२ ॥

बरज मैं काहू की नाहिँ रहूँ ॥ टेक ॥
सुनो री सखी तुम चेतन होइ के, मन की बात कहूँ ॥ १ ॥
साध संगति करि हरि सुख लेऊँ, जग सूँ मैं दूरि रहूँ ॥ २ ॥
तन धन मेरो सबही जावो, भल[१] मेरो सीस लहूँ[२] ॥ ३ ॥
मन मेरो लागो सुमिरन सेती, सब को मैं बोल[३] सहूँ ॥ ४ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सतगुरु सरन रहूँ ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५३ ॥

दरस बिन दुखन लागे नैन ॥ टेक ॥
जब से तुम बिछुरे मेरे प्रभु जी, कबहुँ न पायौं चैन ।
सबद सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लगे तुम बैन ॥ १ ॥
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन ॥ २ ॥
बिरह बिथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गइ करवत औन[४] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५४ ॥

वाल्हा[५] मैं बैरागिण हूँगी हो ।
जों जों[६] भेष म्हाँरो साहिब रीझै, सोइ सोइ भेष धरूँगी हो ॥ टेक ॥
सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो ।
जा को नाम निरंजण कहिये, ता को ध्यान धरूँगी हो ॥ १ ॥
गुरू ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पेरूँगी[७] हो ।

---

(१) बल्कि (२) लेलो। (३) ताना। (४) औन = घर, अर्थात् मेरे कलेजे पर आरी चल गई। (५) प्यारे। (६) जो जो। (७) पहिरूँगी।

प्रेम प्रीत सूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी हो ॥ २ ॥
या तन की मैं करूँ कींगरी,[1] रसना नाम रटूँगी हो ।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, साधाँ संग रहूँगी हो ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५५ ॥

मैं तो राजी भई मेरे मन में, मोहिं पिया मिले इक छिन में ॥टेक॥
पिया मिल्या मोहिं कृपा कीन्ही, दीदार दिखाया हरि ने ॥ १ ॥
सतगुरु सबद लखाया अंस री, ध्यान लगाया धुन में ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मगन भई मेरे मन में ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५६ ॥

मेरे गिरधर गुपाल दूसरो न कोई ॥ टेक ॥
जा के सिर मोर मुकट मेरो पति सोई ।
तात मात भ्रात बंधु अपना नहिं कोई ॥ १ ॥
छाँड़ दई कुल की कान क्या करिहै कोई ।
संतन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥ २ ॥
चुनरी के किये टूक टूक ओढ़ लीन्ह लोई ।
मोती मूँगे उतार बन माला पोई ॥ ३ ॥
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई ।
अब तो वेल फैल गई आनँद फल होई ॥ ४ ॥
दूध की मथनिया बड़े प्रेम से बिलोई ।
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई ॥ ५ ॥
आई मैं भक्ति काज जगत देख मोही ।
दासी मीरा गिरधर प्रभु तारो अब मोही ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५७ ॥

मेरो मन लागो हरि जी सूँ, अब न रहूँगी अटकी ॥ टेक ॥
गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्ही ज्ञान की गुटकी[2] ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हाँरे हिवड़े[3] खटकी ॥ १ ॥

(१) एक बाजा का नाम । (२) घूंट । (३) हृदय ।

माणिक मोती परत[१] न पहिरूँ, मैं कब की नटकी[२] ।
गेणो[३] तो म्हाँरे माला दोवड़ी[४], और चंदन की कुटकी ॥ २ ॥
राज कुल की लाज गमाई, साधाँ के सँग मैं भटकी ।
नित उठ हरिजी के मंदिर जास्याँ, नाच्याँ देदे चुटकी ॥ ३ ॥
भाग खुल्यो म्हाँरो साध संगत सूँ, साँवरिया की बट की ।
जेठ बहू की काण[५] न मानूँ, घूँघट पड़ गइ पटकी[६] ॥ ४ ॥
परम गुराँ के सरन मैं रहस्याँ, परणाम कराँ लुटकी[७] ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जनम मरन सूँ छुटकी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५८ ॥

राम मिलण रो घणो उमावो[८] नित उठ जोऊँ बाटड़ियाँ[९] ।
दरसण बिन मोहिं पल न सुहावै, कल न पड़त है आँखड़ियाँ ॥१॥
तलफ तलफ के बहु दिन बीते, पड़ी बिरह की फाँसड़ियाँ ।
अब तो बेग दया कर साहिब, मैं हूँ तेरी दासड़ियाँ ॥२॥
नैण दुखी दरसण को तरसे, नाभि न बैठे साँसड़ियाँ ।
रात दिवस यह आरत मेरे, कब हरि राखे पासड़ियाँ[१०] ॥३॥
लगी लगन छूटण की नाहीं, अब क्यूँ कीजे आँटड़ियाँ[११]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पूरो मन की आसड़ियाँ[१२] ॥४॥

॥ शब्द ५९ ॥

राणा जी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी ।
साध संग मोहि प्यारा लागै, लाज गई घूँघट की ॥ १ ॥
पीहर मेड़ता[१३] छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी ।
सतगुर मुकर दिखाया घट का, नाचुँगी देदे चुटकी ॥ २ ॥
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी ।
मेरा सुहाग अब मोकूँ दरसा, और न जाने घट की ॥ ३ ॥

---

(१) कभी । (२) इनकार किया । (३) गहना । (४) दुहरी । (५) लाज । (६) छोड़ दिया । (७) लोट कर । (८) उमंग । (९) रास्ता निहारती हूँ । (१०) निकट । (११) टेढ़ापन । (१२) आशा । (१३) नाम नगर का जहाँ मायका मीराबाई का था ।

महल किला राना मोहिँ न चहिये, सारी रेसम पट[1] की।
हुई दिवानी मीरा डोलै, केस लटा सब छिटकी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६० ॥

॥ चौपाई ॥

ज्यूँ अमली के अमल अधारा। यूँ रामैया प्रान हमारा ॥
कोइ निन्दै बन्दै दुख पावै। मोकूँ तो रामैयो भावै ॥

॥ पद ॥

सीसोद्यो[2] रूठ्यो तो म्हाँरो काँई करलेसी।
मैं तो गुण गोबिँद का गास्याँ हो माई ॥ १ ॥
राणो जी रूठ्यो वाँरो[3] देस रखासी।
हरि रूठ्याँ कुम्हलास्याँ हो माई ॥ २ ॥
लोक लाज की काण न मानूँ।
निरभै निसाण घुरास्याँ[4] हो माई ॥ ३ ॥
राम नाम की झाझ[5] चलास्याँ।
भवसागर तर जास्याँ हो माई ॥ ४ ॥
मीरा सरन सबल गिरधर की।
चरण कँवल लपटास्याँ हो माई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६१ ॥

गली तो चारो बंद हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाय ॥ टेक ॥
ऊँची नीची राह रपटीली, पाँव नहीँ ठहराय।
सोच सोच पग धरूँ जतन से, बार बार डिग जाय ॥ १ ॥
ऊँचा नीचा महल पिया का, हम से चढ़्या न जाय।
पिया दूर पंथ म्हाँरा झीना, सुरत झकोला खाय ॥ २ ॥
कोस कोस पर पहरा बैठ्या, पैँड पैँड[6] वटमार।
हे बिधना कैसी रच दीन्ही, दूर बस्यो म्हाँरो गाम ॥ ३ ॥

(१) कपड़ा। (२) राना की जाति का नाम। (३) उसका, अपना। (४) बजाना।
(५) जहाज। (६) परग परग पर।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरा, घर में लीन्हा आय ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६२ ॥

रमैया मैं तो थाँरे रँग राती ॥ टेक ॥
औराँ के पिय परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।
मेरा पिया मेरे रिदे बसत है, गूँज[1] करूँ दिन राती ॥१॥
चूवा[2] चोला[3] पहिर सखीरी, मैं झुरमट रमवा[4] जाती।
झुरमट में मोहिं मोहन मिलिया, खोल मिलूँ गल बाटी[5] ॥२॥
और सखी मद पी पी माती, मैं बिन पीयाँ मद माती।
प्रेम भठी को मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती ॥३॥
सुरत निरत का दिवला सँजोया, मनसा पूरन बाती।
अगम घाणि का तेल सिंचाया, बाल रही दिन राती ॥४॥
जाऊँ नी पीहरिये जाऊँ नी सासुरिये, सतगुर सैन लगाती।
दासी मीरा के प्रभु गिरधर, हरि चरनाँ की मैं दासी ॥५॥

॥ शब्द६ ३ ॥

पायो जी मैं ने नाम रतन धन पायो ॥ टेक ॥
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो ॥ १ ॥
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो ॥ २ ॥
खरचै नहिँ कोइ चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो ॥ ३ ॥
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख हरख जस गायो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ६४ ॥

माई मैं तो लियो रमैयो मोल ॥ टेक ॥
कोइ कहे छानी[6] कोइ कहे चोरी, लियो है बजंता ढोल ॥१॥
कोइ कहे कारो कोइ कहे गोरो, लियो है मैं आँखी खोल ॥२॥
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, लियो है तराजू तोल ॥३॥

---

(१) भेद की बात। (२) लाल। (३) वस्त्र। (४) खेलने। (५) बाँह। (६) छिपाकर।

तन का गहना मैं सब कुछ दीन्हा, दियो है बाजूबंद खोल ॥४॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पुरब जनम का है कौल ॥५॥

॥ शब्द ६५ ॥

म्हाँरे घर आज्यो प्रीतम प्यारा, तुम बिन सब जग खारा[1] ॥टेक॥
तन मन धन सब भेंट करूँ, और भजन करूँ मैं थाँरा।
तुम गुणवंत बड़े गुण सागर, मैं हूँ जी औगणहारा ॥१॥
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा।
मीरा कहै प्रभु कबहि मिलोगे, बिन दरसण दुखियारा ॥२॥

॥ शब्द ६६ ॥

कोई कछू कहे मन लागा ॥ टेक ॥
ऐसी प्रीत लगी मनमोहन, ज्यूँ सोने में सुहागा ॥ १ ॥
जनम जनम का सोया मनुवाँ, सतगुर सब्द सुण जागा ॥ २ ॥
मात पिता सुत कुटम कबीला, टूट गया ज्यूँ तागा ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६७ ॥

जब से मोहिँ नंदनँदन दृष्टि पड़्यो माई।
तब से परलोक लोक कछू ना सोहाई ॥ १ ॥
मोरन की चंद्र कला सीस मुकुट सोहै।
केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहे ॥ २ ॥
कुंडल की अलक झलक कपोलन पर छाई।
मनो[2] मीन सरवर तजि मकर[3] मिलन आई ॥ ३ ॥
कुटिल भृकुटि[4] तिलक भाल चितवन में टौना[5]।
खंजन[6] अरु मधुप[7] मीन भूले मृग छौना[8] ॥ ४ ॥
सुंदर अति नासिका सुग्रीव[9] तीन रेखा।
नटवर[10] प्रभु भेष धरे रूप अति बिसेपा ॥ ५ ॥

---

(१) बाड़ा के किनारे हिफ़ाजत के लिये काँटे लगा देते हैं। (२) मानो, गोया (३) मगर। (४) भौं। (५) जादू। (६) खंजरिच चिड़िया। (७) भौंरा। (८) बच्चा (९) गला। (१०) नट के समान काछनी काछे।

अधर बिंब अरुन नैन मधुर मंद हाँसी ।
दसन[1] दमक दाड़िम[2] दुति[3] चमके चपला[4] सी ॥६॥
छुद्र घंट किंकिनी[5] अनूप धुनि सोहाई ।
गिरधर अंग अंग मीरा बलि जाई ॥ ७ ॥

॥ शब्द ६८ ॥

नैनन बनज बसाऊँ री, जो मैं साहिब पाऊँ[6] ॥ टेक ॥
इन नैनन मेरा साहिब बसता, डरती पलक न नाऊँ री ॥ १
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ री ॥ २
सुन्न महल में सुरत जमाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री ॥ ३
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बल जाऊँ री ॥ ४

॥ शब्द ६९ ॥

होता जाजो राज हमारे महलाँ, होता जाजो राज ॥ टेक
मैं औगुनी मेरा साहिब सगुना, संत सँवारैं काज ॥ १
मीरा के प्रभु मँदिर पधारो, करके केसरिया साज ॥ २

॥ शब्द ७० ॥

चलाँ वाही देस प्रीतम पावाँ, चलाँ वाही देस ॥ टेक ॥
कहो कसुम्बी सारी रँगावाँ, कहो तो भगवा भेस ॥ १ ॥
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ, कहो छिटकावाँ केस ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुनियो बिरद के नरेस ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७१ ॥

न भावे थारो देसड़ लो जी, रूड़ो रूड़ो[7] ॥ टेक ॥
हरि की भगति करे नहिं कोई, लोग बसैं सब कूड़ो ॥ १ ॥
माँग और पाटी उतार धरूँगी, ना पहिरूँ कर चूड़ो ॥ २ ॥
मीरा हठीली कहे संतन से, बर पायो छे पूरो ॥ ३ ॥

---

(१) दाँत। (२) अनार। (३) प्रकाश। (४) बिजली। (५) छोटी छोटी घंटियाँ जो करधनी में पोह देते हैं। (६) जो मुझे साहिब मिल जायँ तो अपनी आँखों को जो बनजारे की तरह चारो ओर फिरती हैं बसा या ठहरा रक्खूँ। (७) ——

॥ शब्द ७२ ॥

हेली सुरत सोहागिन नार, सुरत मेरी राम से लगी ॥ टेक ॥
लगनी लहँगा पहिर सोहागिन, बीती जाय बहार।
धन जोबन दिन चार का हे, जात न लागे बार ॥ १ ॥
झूठे बर को क्या बरूँजी, अधबिच में तज जाय।
बर बराँ ला रामजी, म्हारो चूड़ी अमर हो जाय ॥ २ ॥
राम नाम का चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ की मैं दास ॥ ३ ॥

॥ शब्द ७३ ॥

रघुनन्दन आगे नाचूँगी ॥ टेक ॥
नाच नाच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी ॥ १ ॥
प्रेम प्रीत का बाँध घँघूरा, सुरत की कछनी काछूँगी ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ॥ ३ ॥
पिया के पलँगा जा पोढ़ूँगी, मीरा हरि रँग राचूँगी ॥ ४ ॥

बिनती और प्रार्थना का अंग

॥ शब्द १ ॥

अब तो निभायाँ बनेगा, बाँह गहे की लाज ॥ टेक ॥
समरथ सरण तुम्हारी साँइयाँ, सरब सुधारण काज ॥ १ ॥
भवसागर संसार अपरबल, जा में तुम हो जहाज ॥ २ ॥
निरधाराँ आधार जगत-गुर, तुम बिन होय अकाज ॥ ३ ॥
जुग जुग भीर[1] करी भक्तन की, दीन्ही मोच्छ समाज ॥ ४ ॥
मीरा सरण गही चरणन की, पेज[2] रखो महराज ॥ ५ ॥

॥ शब्द २ ॥

कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत[3] ॥ टेक ॥
आसण माँड़ अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत ॥ १ ॥
मैं तो जाणू जोगी संग चलेगा, छाँड़ गयो अधबीच ॥ २ ॥

(१) सहायता। (२) लाज। (३) निर्मोघा।

आत न दीसे जात न दीसे, जोगी किस का मीत ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हो जी म्हाराज छोड़ मत जाज्यो ॥ टेक ॥
मैं अबला बल नाहिँ गुसाईं, तुमहिँ मेरे सिरताज ॥ १ ॥
मैं गुणहीन गुण नाहिँ गुसाईं, तुम समरथ महराज ॥ २ ॥
रावली[1] होइ ये किन रे जाऊँ, तुम हो हिवड़ा रो साज[2] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्याँ सामा[3] ॥ टेक ॥
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ, सरैं मनोरथ कामा ॥ १ ॥
तुम बिच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा ॥ २ ॥
मीरा के मन और न मानै, चाहे सुंदर स्यामा ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिँ राखो कृपानिधान ॥ टेक ॥
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान[4] ।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी बिमान ॥ १ ।
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत सुजान ।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान ॥ २ ।
कहँ लगि कहूँ गिनत नहिँ आवै, थकि रहे बेद पुरान ।
मीरा कहै मैं सरण रावली, सुनियो दोनों कान ॥ ३ ।

॥ शब्द ६ ॥

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार, प्रभु जी अरज करूँ छूँ ॥ टेक ।
या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार ॥ १ ।
अष्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख पार ॥ २ ।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार ॥ ३ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवागवन निवार ॥ ४ ।

(१) आपकी । (२) हिये का भूषण । (३) साँझ । (४) सदन कसाई ।

॥ शब्द ७ ॥

रालो[1] बिड़द[2] मोहिँ रुढ़ो[3] लागे, पीड़ित पराये प्राण[4] ॥ १ ॥
सगो[5] सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान ॥ २ ॥
ग्राह गह्यो गजराज उबार्‌यो, बूड़ न दियो छे जान ॥ ३ ॥
मीरा दासी अरज करत है, नहिँ जी सहारो आन[6] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ८ ॥

म्हाँरो जनम मरन को साथी, थाँ ने नहिँ बिसरूँ दिन राती ॥टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती[7] ॥ १ ॥
यो संसार सकल जग झूँठो, झूँठा कुल रा नाती ।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती ॥ २ ॥
यो मन मेरो बड़ा हरामी, ज्यूँ मद मातो हाथी ।
सतगुरु दस्त[8] धर्‌यो सिर ऊपर, आँकुस दे समझाती ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती[9] ।
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

पिया म्हाँरे नैणा आगे रहज्यो जी ॥ टेक ॥
नैणा आगे रहज्यो, म्हाँने भूल मत जाज्यो जी ॥ १ ॥
भौसागर में बही जात हूँ बेग म्हारी सुध लीज्यो जी ॥ २ ॥
राणा जी भेजा बिष का प्याला, सो अमृत कर दीज्यो जी ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुरन मत कीज्यो जी ॥ ४ ॥

॥ शब्द १० ॥

स्वामी सब संसार के हो, साँचे श्रीभगवान ॥ टेक
स्थावर जंगम पावक पाणी, धरती बीच समान ।
सब में महिमा तेरी देखी, कुदरत के कुरबान ॥ १

(१) आप का। (२) प्रण (पतित-पावन का)। (३) अच्छा। (४) भक्त के दु[illegible] आप दुखी होते हो। (५) सम्बन्धी। (६) दूसरा। (७) लाल। (८) हाथ। (९) रत।

सूदामा के दारिद खोये, बारे की पहिचान[1]।
दो मुट्ठी तंदुल की चाबी, दीन्हो द्रव्य महान[1] ॥ २ ॥
भारत मेँ अर्जुन के आगे, आप भये रथवान।
उन ने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥ ३ ॥
ना कोइ मारे ना कोइ मरता, तेरा यह अज्ञान।
चेतन जीव तो अजर अमर है, यह गीता को ज्ञान ॥ ४ ॥
मुझ पर तो प्रभु किरपा कीजे, बंदी अपनी जान।
मीरा गिरधर सरण तिहारी, लगै चरण मेँ ध्यान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ।
झूठे धंधोँ से मेरा फंदा छुड़ाओ ॥ टेक ॥
लूटे ही लेत बिबेक का डेरा, बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा ॥१॥
हाय राम नहिँ कछु बस मेरा, मरत हूँ बिबस प्रभु धाओ सवेरा ॥२॥
धर्म उपदेस नित प्रति सुनती हूँ, मन कुचाल से भी डरती हूँ ॥३॥
सदा साधु सेवा करती हूँ, सुमिरण ध्यान मेँ चित धरती हूँ ॥४॥
भक्ति मार्ग दासी को दिखाओ, मीरा को प्रभु साची दासी बनाओ॥५॥

॥ शब्द १२ ॥

म्हाँरी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी ॥ टेक ॥
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने दीजो जी ॥१॥
मैँ तो हूँ बहु औगणहारी, औगण चित मत दीजो जी ॥२॥
मैँ तो दासी थाँरे चरण जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी ॥३॥
मीरा तो सतगुरु जी सरणे, हरि चरणाँ चित दीजो जी ॥४॥

॥ शब्द १३ ॥

म्हाँरे नेणा आगे रहीजो जी, स्याम गोबिन्द ॥ टेक ॥
दास कबीर घर बालद[2] जो लाया, नामदेव का छान छवंद ॥१॥

---

(१) श्रीकृष्ण और सुदामा जी लड़कपन में एक ही पंडित से पढ़ते थे। सुदामाजी के थोड़े से चावल की भेंट पर श्रीकृष्ण ने उन्हें भारी धनी बना दिया। (२) बैल।

दास धना को खेत निपजायो, गज की टेर सुनंद ॥ २ ॥
भीगणी का बेर सुदामा का तुन्दुल, भर मुठड़ी[1] बुकंद[2] ॥ ३ ॥
करमा बाई को खीँच[3] अरोग्यो, होइ परसण पावंद[2] ॥ ४ ॥
सहस गोप बिच स्याम बिराजे, ज्योँ तारा बिच चंद ॥ ५ ॥
सब संतोँ का काज़ सुधारा, मीरा सूँ दूर रहंद ॥ ६ ॥

॥ शब्द १४ ॥

तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ, हूँ हाजिर नाजिर कब की खड़ी ॥ टेक ॥
साऊ[4] थे दुसमण होइ लागे, सब ने लगूँ कड़ी[5] ।
तुम बिन साऊ कोऊ नहीँ है, डिगी[6] नाव मेरी समँद अड़ी ॥१॥
दिन नहीँ चैन रात नहिँ निदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी ।
बान बिरह के लगे हिये मेँ, भूलूँ न एक घड़ी ॥ २ ॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी ।
कहा बोझ मीरा मेँ कहिये, सौ ऊपर एक घड़ी[7] ॥ ३ ॥
गुरु रैदास मिले मोहिँ पूरे, धुर से कलम भिड़ी ।
सतगुरु सैन दई जब आ के, जोत मेँ जोत रली ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी ॥ टेक ॥
भौसागर मेँ बही जात हूँ, काढ़ो तो थाँरी मरजी ॥ १ ॥
यो संसार सगो नहिँ कोई, साचा सगा रघुबर जी ॥ २ ॥
मात पिता और कुटँब कबीलो, सब मतलब के गरजी ॥ ३ ।
मीरा को प्रभु अरजी सुन लो, चरन लगाओ थाँरी मरजी ॥ ४

---

(१) मुट्ठी । (२) खाया । (३) बजरे की खिचड़ी । (४) रक्षक । (५) कड़वी । (६) झकोला खाती है । (७) पसेरी ।

मीराबाई और कुटुम्बियों की कहा-सुनी

॥ शब्द १ ॥

म्हाँना गुरु गोबिंद री आण[१], गोरल[२] ना पूजाँ ॥ टेक ॥
[सास]–ओरज[३] पूजे गोरज्या[२] जी, थे क्यूँ पूजो न गोर ।
मन वंछत फल पावस्यो जी, थे क्यूँ पूजो ओर ॥ १ ॥
[मीरा]–नहिँ हम पूजाँ गोरज्या जी, नहिँ पूजाँ अनदेव ।
परम सनेही गोबिंदो, थे काँइ जानो म्हाँरो भेव ॥ २ ॥
[सास]–बाल सनेही गोबिंदो, साध संताँ को काम ।
थे बेटी राठोड़ की, थाँ ने राज दियो भगवान ॥ ३ ॥
[मीरा]–राज करै ज्यानाँ करण दीज्यो, मैं भगताँ दी दास
सेवा साधू जनन की, म्हाँरे राम मिलण की आस ॥ ४ ॥
[सास]–लाजै पीहर[४] सासरो[५] माइतणो मोसाल[६] ।
सबही लाजे मेड़तिया[७] जी, थाँसूँ[८] बुरा कहे संसार ॥ ५ ॥
[मीरा]–चोरी कराँ न मारगी[९], नहिँ मैं करूँ अकाज ।
पुन्न के मारग चालताँ, झक मारो संसार ॥ ६ ॥
नहिँ मैं पीहर सासरे, नहीँ पिया जी री साथ ।
मीरा ने गोविंद मिल्या जी, गुरु मिलिया रैदास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

[ऊदा]–भाभी मीरा कुल ने लगाई गाल[१०],
ईडर गढ़ का आया जी ओलंबा[११] ।
[मीरा]–बाई ऊदा[१२] थाँरे म्हाँरे नातो नाहिँ,
वासो वस्याँ का आया जी ओलंबा[१३] ॥ १ ॥

---

(१) मरजाद, शान, कसम। (२) गनगौर। (३) दूसरे लोग। (४) बाप का घर। (ससुराल। (६) ननिहाल। (७) बाप के भाई-बंद मेड़तिया। (८) तुमको। (९) जारी, छिना (१०) कलंक। (११) उलहना, शिकायत। (१२) मीराबाई की ननद का नाम। (१३) तुम्ह घर आकर रही इसी से उलहना मिला।

[ऊदा]-भाभी मीरा का साधाँ का संग निवार,
सारो सहर थाँरी निंदा करै।
[मीरा]-बाई ऊदा करे तो पड़्या झख मारो,
मन लागो रमता राम सूँ ॥ २ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा पहरोनी मोत्याँ को हार,
गहणो पहरो रतन जड़ाव को।
[मीरा]-बाई ऊदा छोड़्यो मैं मोत्याँ को हार,
गहणो तो पहर्‌यो सील संतोष को ॥ ३ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा औराँ के आवेजी आछी रूढ़ी जान[1],
थाँरे आवै छै हरिजन पावणा[2]।
[मीरा]-बाई ऊदा चढ़ चौबाराँ झाँक,
साधाँ की मँडली लागे सुहावणी ॥ ४ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा लाजे लाजे गढ़ चित्तौड़,
राणोजी लाजे गढ़ रा राजवी।
[मीरा]-बाई ऊदा तार्‌यो तार्‌यो गढ़ चितौड़,
राणाजी तार्‌या मढ़ का राजवी ॥ ५ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा लाजे लाजे थाँरा मायन बाप,
पीहर लाजे जी थाँरो मेड़तो।
[मीरा]-बाई ऊदा तार्‌या मैं तो मायन बाप,
पीहर तार्‌यो जी मेड़तो ॥ ६ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणा जी कियो छै थाँ पर कोप,
रतन कचोले[3] विष घोलियो।
[मीरा]-बाई ऊदा घोल्यो तो घोलण दो,
कर चरणामृत वाही मैं पीवस्याँ ॥ ७ ॥

---

(१) बारात। (२) पाहुन। (३) कटोरा।

[ऊदा]-भाभी मीरा देखतड़ाँ ही मर जाय,
यो बिष कहिये बासक नाग को।
[मीरा]-बाई ऊदा नहीँ म्हाँरे मायन बाप,
अमर डाली धरती झेलिया ॥ ८ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणा जी ऊभा छे[1] थाँरे द्वार,
पोथी माँगे छे थाँरा ज्ञान की।
[मीरा] बाई ऊदा पोथी म्हाँरी खाँड़ा की धार,
ज्ञान निभावण राणो है नहीँ ॥ ९ ॥
[ऊदा]-भाभी मीरा राणाजी रो बचन न लोप[2]।
उन रूठ्याँ भीड़ी[3] कोउ नहीँ।
[मीरा]-बाई ऊदा रमापति[4] आवे म्हारी भीड़[3],
अरज करूँ छूँ ता सूँ बीनती ॥ १० ॥

॥ शब्द ३ ॥

अब मीरा मान लीज्यो म्हाँरी,
हाँजी थाँने[5] सइयाँ[6] बरजे सारी ॥टेक॥

राजा बरजे राणी बरजे, बरजे सब परिवारी।
कुँवर पाटवी[7] सो भी बरजे, और सेहल्या[8] सारी ॥ १ ॥
सीस फूल सिर ऊपर सोवे[9], बिँदली[10] सोभा भारी।
गले गुजारी[11] कर में कंकण, नेवर पहिरे भारी ॥ २ ॥
साधुन के ढिंग बैठ बैठ के, लाज गमाई सारी।
नित प्रति उठि नीच घर जावो, कुल कूँ लगाओ गारी ॥ ३ ॥
बड़ा घराँ का छोरु[12] कहावो, नाचो दे दे तारी।
वर पायो हिंदुवाणी सूरज, अब दिल में कहा धारी ॥ ४ ॥

(१) खड़ा है। (२) इनकार मत करो। (३) सहायक। (४) ईश्वर। (५) तुमको। (६) सखियाँ। (७) सब से बड़ा लड़का। (८) सहेलियाँ। (९) सोहे। (१०) एक गहना जो औरतें सिर पर पहनती हैं। (११) गुलूबन्द। (१२) लड़की।

तार्‌यो पीहर सासरो तार्‌यो, माय मोसाली[1] तारी ।
मीरा ने सतगुरु जी मिलिया, चरण कमल बलिहारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

अब नहिँ मानूँ राणा थाँरी, मैँ बर पायो गिरधारी ॥टेक॥
मनि कपूर की एक गति है, कोऊ कहो हजारी ।
कंकर कंचन एक गति है, गुंज[2] मिरच इकसारी ॥ १ ॥
अनड़ धणी को सरणो लीनो, हाथ सुमिरनी धारी ।
जोग लियो जब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥ २ ॥
साधू संगत महँ दिल राजी, भई कुटुँब सूँ न्यारी ।
क्रोड़ बार समझावो मोकूँ, चालूँगी बुद्ध हमारी ॥ ३ ॥
रतन जड़ित की टोपी सिर पै, हार कंठ को भारी ।
चरण घूँघरू घमस[3] पड़त है, म्हैँ कराँ[4] स्याम सूँ यारी ॥ ४ ॥
लाज सरम सबही मैँ डारी, यौ तन चरण अधारी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, झक मारो संसारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ५ ॥

म्हाँरे सिर पर सालिगराम, राणाजी म्हारो काईँ करसी ॥टेक॥
मीरा सूँ राणा ने कही रे, सुण मीरा मोरी बात ।
साधाँ की संगत छोड़ दे रे, सखियाँ सब सकुचात ॥ १ ॥
मीरा ने सुन योँ कही रे, सुन राणा जी बात ।
साध तो भाई बाप हमारे, सखियाँ क्यूँ घबरात ॥ २ ॥
जहर का प्याला भेजिया रे, दीजो मीरा हाथ ।
अमृत करके पी गई रे, भली करैँ दीनानाथ ॥ ३ ॥
मीरा प्याला पी लिया रे, बोली दोउ कर जोर ।
तैँ तो मारण की करी रे, मेरो राखणहारो और ॥ ४ ॥
आधे जोहड़[5] कीच है रे, आधे जोहड़ हौज ।

---

(१) नाना का घर । (२) घुँघची । (३) जोर से, झनकार के साथ । (४) मैंने किया । (५) बड़ा तालाब या झील ।

आधे मीरा एकली रे, आधे राणा की फौज ॥ ५ ॥
काम क्रोध को डाल के रे, सील लिये हथियार।
जीती मीरा एकली रे, हारी राणा की धार[1] ॥ ६ ॥
काचगिरी[2] का चौतरा रे, बैठे साध पचास।
जिन में मीरा ऐसी दमके, लख तारों में परकास ॥ ७ ॥
टाँडा जब वे लादिया रे, बेगी दीन्हा जाण।
कुल की तारण अस्तरी[3] रे, चली है पुष्कर न्हाण ॥ ८ ॥

॥ शब्द ६ ॥

ऊदाबाई-थाने बरज बरज मैं हारी, भाभी मानो बात हमारी ॥टेक॥
राणे रोस कियो थाँ ऊपर, साधाँ में मत जा री।
कुल को दाग लगै छै भाभी, निंदा हो रही भारी ॥ १ ॥
साधाँ रे सँग बन बन भटको, लाज गुमाई सारी।
बड़ा घरा थें जनम लियो छै, नाचो दे दे तारी ॥ २ ॥
बर पायो हिंदुवाणे सूरज, थें काईं मन धारी।
मीरा गिरधर साध संग तज, चलो हमारे लारी ॥ ३ ॥
मीराबाई-मीरा बात नहीं जग छानी[4], ऊदाबाई समझो सुधर सयानी ॥४
साधु मात पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी।
संत चरन की सरन रैन दिन, सत्त कहत हूँ बानी ॥ ५ ॥
राणा ने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संताँ हाथ बिकानी ॥ ६ ॥
ऊदाबाई-भाभी बोलो वचन विचारी।
साधाँ की संगत दुख भारी, मानो बात हमारी ॥ ७ ॥
छापा तिलक गल हार उतारो, पहिरो हार हजारी।
रतन जड़ित पहिरो आभूषण, भोगो भोग अपारी।
मीरा जी थें चलो महल में, थाँने सोगन[5] म्हारी ॥ ८ ॥

---

(१) फौज। (२) बिल्लौर। (३) स्त्री। (४) छिपी। (५) कसम।

मीराबाई—भाव भगत भूषण सजे, सील संतोष सिँगार ।
ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधर जी भरतार ॥ ९ ॥
ऊदाबाई मन समझ, जावो अपने धाम ।
राज पाट भोगो तुम्हीँ, हमैँ न तासूँ काम ॥ १० ॥

राग होली

॥ शब्द १ ॥

फागुन के दिन चार रे, होली खेल मना रे ॥ टेक ॥
बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झनकार रे ॥ १ ॥
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम रोम रँग सार रे ॥ २ ॥
सील सँतोष की केसर घोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥ ३ ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादल, बरसत रंग अपार रे ॥ ४ ॥
घट के पट सब खोल दिये हैँ, लोक लाज सब डार रे ॥ ५ ॥
होली खेल प्यारी पिय घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे ॥ ६ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरन कँवल बलिहार रे ॥ ७

॥ शब्द २ ॥

होली पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मेरी प्यारी ॥टेक
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी ।
सूनी बिरहन पिव बिन डोलै, तज दइ पीव पियारी ।
भई हूँ या दुख कारी ॥ १ ॥
देस बिदेस सँदेस न पहुँचे, होय अँदेसा भारी ।
गिणताँ गिणताँ घस गइँ रेखा, आँगरियाँ की सारी ।
अजहुँ नहिँ आये मुरारी ॥ २ ॥
बाजत झाँज मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी ।
आई बसंत कंथ घर नाहीँ, तन मेँ जर भया भारी ।
[illegible] मन कहा बिचारी ॥ ३ ॥

अब तो मेहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कँवारी[1]।
लगी दरसन की तारी॥ ४॥

॥ शब्द ३॥

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किण सँग खेलूँ होरी॥टेक॥
तुम तो जाय बिदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी।
तन आभूषण छोड़े सबही, तज दिये पाट पटो री।
मिलन की लग रही डोरी॥ १॥
आप मिल्याँ बिन कल न पड़त है, त्यागे तलक[2] तमोली[3]।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी।
रस बिन बिरहिन दोरी[4]॥ २॥

॥ शब्द ४॥

होली पिया बिन मोहिँ न भावे, घर आँगण न सुहावे॥टेक॥
दीपक जोय कहा करूँ हेली, पिय परदेस रहावे।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक सुसक जिय जावे।
नींद नैन नहिँ आवे॥ १॥
कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊँ, निस दिन बिरह सतावे।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे।
पिया कब दरस दिखावे॥ २॥
ऐसा है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे।
वा विरियाँ कब होसी मोकूँ, हँस कर निकट बुलावे।
मीरा मिल होली गावे॥ ३॥

॥ शब्द ५॥

रमैया बिन नींद न आवे।
नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावे[5]॥टेक॥
बिन पिया जोत मँदिर अँधियारो दीपक दाय[6] न आवे।

---

(१) क्वाँरी। (२) तिलक। (३) पान। (४) दुखी। (५) सुलगाना। (६) पसंद।

पिया बिन मेरी सेज अलूनी[1] , जगत रैण बिहावे[2] ।
पिया कब रे घर आवे ॥ १ ॥
दादुर मोर पपिहरा बोलै, कोयल सबद सुणावे ।
घुमँड घटा ऊलर[3] होइ आई, दामिन दमक डरावे ।
नैन झर लावे ॥ २ ॥
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कूण बुतावे[4] ।
बिरह नागण मोरी काया डसी है, लहर लहर जिव जावे ।
जड़ी घस लावे ॥ ३ ॥
को है सखी सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावे ।
मीरा कूँ प्रभु कब रे मिलोगे, मन मोहन मोहिँ भावे ।
कबै हँस कर बतलावै[5] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

रँग भरी रँग भरी रँग सूँ भरी री, होली आई प्यारी रँग सूँ भरी री ।१।
उड़त गुलाल लाल भये बादल, पिचकारिन की लगी झरी री ॥२॥
चोवा चंदन और अरगजा, केसर गागर[6] भरी धरी री ॥३॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, चेरी होय पायन में परी री ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

किण सँग खेलूँ होली, पिया तज गये हैं अकेली ॥ टेक ॥
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिँ लागै, पिया कारण भई गैली[7] ।
मुझे दूरी क्यूँ म्हेली[8] ॥ १ ॥
अब तुम प्रीत और से जोड़ी, हम से करी क्यूँ पहिली ।
बहु दिन बीते अजहुँ नहिँ आये, लग रही तालावेली[9] ।
किण बिलमाये हेली ॥ २ ॥

---

(१) फीकी । (२) बीते । (३) चढ़ना । (४) बुझावे, शांत करे । (५) बोले । (६) घड़ा (७) बावली । (८) रक्खी । (९) बेकली ।

स्याम बिना जिवड़ो मुरझावे, जैसे जल बिन बेली[१] ।
मीरा कूँ प्रभु दरसन दीज्यो, जनम जनम की चेली ।
दरसन बिन खड़ी दुहेली[२] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ८ ॥

हरि सोँ बिनती करोँ कर जोरी ॥ टेक ॥
बरबस रचल धमारी, हम घर मातु पिता पारैँ गारी ॥ १ ॥
निपट अलप बुधि दीन गति थोरी, प्रेम नगन रस ले बरजोरी ॥२॥
मीरा के प्रभु सरण तिहारी, अवचक आय मिलहु गिरधारी ॥३॥

राग सावन

॥ शब्द १ ॥

मतवारो बादल आयो रे, हरि के सँदेसो कुछ नहिँ लायो रे ॥टेक॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनायो रे ।
कारी अँधियारी बिजुली चमके, बिरहन अति डरपायो रे ॥१॥
गाजे बाजे पवन मधुरिया, मेहा अति झड़ लायो रे ।
फूँके[३] काली नाग बिरह की जारी, मीरा मन हरि भायो रे ॥२॥

॥ शब्द २ ॥

बादल देख झरी[४] हो, स्याम मैँ बादल देख झरी ॥ टेक ॥
काली पीली घटा उमँगी, बरस्यो एक धरी[५] ॥ १ ॥
जित जाऊँ तित पानिहि पानी, हुई सब भोम[६] हरी ॥ २ ॥
जा का पिव परदेस बसत है, भीजै बार[७] खरी[८] ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, कीज्यो प्रीत खरी[९] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

सुनी मैँ हरि आवन की आवाज ॥ टेक ॥
महल चढ़ि चढ़ि जोऊँ[१०] मोरी सजनी, कब आवे म्हाराज ॥ १ ॥

(१) लता, बेल। (२) दुखी। (३) साँप फुफकार मारता है। (४) आँसू की धारा चली। (५) एक धार होकर। (६) जमीन। (७) बाहर। (८) खड़ी। (९) खालिस। (१०) निहारूँ।

दादुर मोर पपीहा बोलै, कोइल मधुरे साज ॥ २ ॥
उमग्यो इन्द्र चहूँ दिस बरसे, दामिन छोड़ी लाज ॥ ३ ॥
धरती रूप नवा नवा धरिया, इंद्र मिलन के काज ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, वेग मिलो म्हाराज ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आओ जी स्याम मोरा रे ॥ टेक॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घन घोरा रे ॥ १ ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा रे ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ज्यो[1] वारूँ सोही थोरा रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द ५ ॥

देखी बरषा की सरसाई[2], मोरे पिया जी की मन में आई ॥ टेक ॥
नन्ही नन्ही बूँदन बरसन लाग्यो, दामिन दमके झर लाई ॥ १ ॥
स्याम घटा उमड़ी चहुँ दिस से, बोलत मोर सुहाई ॥ २॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनद मंगल गाई ॥ ३ ॥

॥ शब्द ६ ॥

नन्द नँदन बिलमाई, बदरा ने घेरी माई ॥ टेक ॥
इत घन लरजे उत घन गरजे, चमकत बिज्जु सवाई ॥ १ ॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, पवन चले परवाई[3] ॥ २ ॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल सब्द सुनाई ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरन कमल चित लाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

बरसे बदरिया सावन की, सावन की मन भावन की ॥ टेक ॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनि हरि आवन की ॥ १ ॥
उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आयो, दामिन दमके झर लावन की॥ २ ॥
नन्ही नन्ही बूँदन मेहा बरसे, सीतल पवन सोहावन की ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनन्द मंगल गावन की ॥ ४ ॥

(१) जो । (२) [illegible] । (३) पुरवाई ।

॥ शब्द ८ ॥

भींजे म्हाँरो दाँवन चीर, सावणियो लूम रह्यो रे[१] ॥ टेक ॥
आप तो जाय बिदेसाँ छाये, जिवड़ा धरत न धीर ॥ १ ॥
लिख लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ, कब घर आवै म्हाँरो पीव ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दरसन दोने[२] बलबीर[३] ॥ ३ ॥

॥ शब्द ९ ॥

मेहा बरसबो करेरे, आज तो रमियो मेरे घरे रे ॥ टेक ॥
नान्ही नान्ही बूँद मेघ घन बरसे, सूखे सरवर भरे रे ॥ १ ॥
बहुत दिनाँ पै प्रीतम पायो, बिछुरन को मोहिँ डर रे ॥ २ ॥
मीरा कहे अति नेह जुड़ायो[४], मैं लियो पुरबलो[५] बर[६] रे ॥ ३ ॥

॥ शब्द १० ॥

रे पपइया प्यारे कब को बैर चितारो[७] ॥ टेक ॥
मैं सूती छी[८] अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारो ॥ १ ॥
दाध्या[९] ऊपर लूण[१०] लगायो, हिवड़े[११] करवत[१२] सारो[१३] ॥ २ ॥
उठि बैठो बृच्छ की डाली, बोल बोल कंठ सारो ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरनाँ चित धारो ॥ ४ ॥

राग सोरठ

॥ शब्द १ ॥

छाँड़ो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना ॥ टेक ॥
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना ॥ १ ॥
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरो ना ॥ २ ॥
वृन्दावन की कुंज गली में, रीत छोड़ अनरीत करो ना ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, चरण कमल चित टारे टरो ना ॥ ४ ॥

---

(१) सावन छाय रहा है और मेरी चीर का पल्ला भीगता है। (२) देव। (३) बलदेव जी के भाई अर्थात् श्रीकृष्ण। (४) लगाया। (५) पिछले जन्म का। (६) वरदान। (७) चेतिया। (८) थी। (९) जले पर। (१०) नोन। (११) कलेजा। (१२) आरी। (१३) चलाया

॥ शब्द २ ॥

प्रभु जी थें[1] कहाँ गयो नेहड़ी लगाय ॥ टेक ॥
छोड़ गया बिस्वास सँगाती, प्रेम की बाती बराय ॥ १ ॥
बिरह समँद में छोड़ गया छो, नेह की नाव चलाय ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु कब रे मिलोगे, तुम बिन रह्यो न जाय ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हरि तुम हरो जन की भीर[2] ॥ टेक ॥
द्रोपदी की लाज राख्यो तुम बढ़ायो चीर ॥ १ ॥
भक्त कारन रूप नरहरि धर्‌यो आप सरीर ॥ २ ॥
हरिनकस्यप मार लीन्हो धर्‌यो नाहिन धीर ॥ ३ ॥
बूड़ते गजराज राख्यो कियो बाहर नीर ॥ ४ ॥
दास मीरा लाल गिरधर दुख जहाँ तहँ पीर ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

साजन सुध ज्यूँ जाने त्यूँ लीजे हो ॥ टेक ॥
तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरी कीजे हो ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैन नहिँ निद्रा यूँ तन पल पल छीजे हो ॥ २ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर मिल बिछुरन नहिँ कीजे हो ॥ ३ ॥

॥ राग जैजैवंती ॥

सोवतही पलका[3] में मैं तो, पलक लगी पल में पिउ आये ॥ १ ॥
मैं जु उठी प्रभु आदर देन कूँ, जाग परी पिव ढूँढ़ न पाये ॥ २ ॥
और सखी पिउ सूत गमाये, मैं जु सखी पिउ जागि गमाये ॥ ३ ॥
आज की बात कहा कहूँ सजनी, सुपना में हरि लेत बुलाये ॥ ४ ॥
बस्तु एक जब प्रेम की पकरी, आज भये सखि मन के भाये ॥ ५ ॥
वो माहरो सुने अरु गुनि है, बाजे अधिक बजाये ॥ ६ ॥
मीरा कहे सत्त कर मानो, भक्ति मुक्ति फल पाये ॥ ७ ॥

---

(१) तुम । (२) कष्ट । (३) पलँग ।

॥ राग मारू ॥

नैना लोभी रे बहुरि सके नहिँ आय।
रोम रोम नख सिख सब निरखत, ललच रहे ललचाय ॥ १ ॥
मैँ ठाढ़ी गृह आपने रे, मोहन निकसे आय।
सारँग ओट तजे कुल अंकुस, बदन दिये मुसकाय ॥ २ ॥
लोक कुटंबी बरज बरजहीँ, बतियाँ कहत बनाय।
चंचल चपल अटक नहिँ मानत, पर हथ गये बिकाय ॥ ३ ॥
भली कहो कोइ बुरी कहो मैँ, सब लई सीस चढ़ाय।
मीरा कहे प्रभु गिरधर के बिन, पल भर रह्यो न जाय ॥ ४ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

आये आये जी म्हाँरे म्हाराज आये, निज भक्तन के कांज बनाये ॥१॥
तज बैकुंठ तज्यो गरुड़ासन, पावन बेग उठ धाये ॥२॥
जब ही दृष्टि परे नँद नंदन, प्रेम भक्ति रस प्याये ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित लाये ॥४॥

॥ राग देव गन्धार ॥

बसो मेरे नैनन में नँदलाल ॥ टेक ॥
मोहनी मूरति साँवरि सूरति, बने नैन बिसाल ॥ १ ॥
अधर सुधा रस मुरली राजित, उर बैजंती माल ॥ २ ॥
छुद्र घंटिका कटि तटि सोभित, नूपुर सब्द रसाल ॥ ३ ॥
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त-बछल गोपाल ॥ ४ ॥

॥ राग कल्यान ॥

मेरो मन राम हि राम रटै रे ॥ टेक ॥
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ॥ १ ॥
जनम जनम के खत[1] जु पुराने, नामहि लेत फटे रे ॥ २ ॥
कनक कटोरे इम्रत भरियो, पीवत कौन नटै[2] रे ॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटे रे ॥ ४ ॥

(१) कर्मों का लेखा। (२) रुके।

॥ राग जंगला ॥

कभी म्हाँरी गली आव रे, जिया की तपत बुझाव रे।
म्हाँरे मोहना प्यारे ॥ टेक ॥
रे साँवले बदन पर, कई कोट काम वारे ॥ १ ॥
रा खूबी के दरस पै, नैन तरसते म्हाँरे ॥ २ ॥
ायल फिरूँ तड़पती, पीड़ जाने नहिँ कोई ॥ ३ ॥
जेस लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई जाने सोई ॥ ४ ॥
जैसे जल के सोखे[1], मीन क्या जिवैँ बिचारे ॥ ५ ॥
कृपा कीजे दरस दीजे, मीरा नन्द के दुलारे ॥ ६ ॥

॥ राग भोग ॥

तुम जीमो[2] गिरधर लाल जी,
ीरा दासी अरज करे छे, सुनिये परम दयाल जी ॥ टेक ॥
छप्पन भोग छतीसो बिंजन, पावो जन प्रतिपाल जी ॥ १ ॥
ाज भोग आरोगो गिरधर, सनमुख राखो थाल जी ॥ २ ॥
ीरा दासी चरन उपासी, कीजे बेग निहाल जी ॥ ३ ॥

मिश्रित अंग

॥ शब्द १ ॥

अच्छे मीठे चाख चाख, बोर[3] लाई भीलणी ॥ टेक ॥
ऐसी कहा अचारवती[4], रूप नहीँ एक रती।
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी[5] ॥ १ ॥
झूठे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण।
ऊँच नीच जाने नहीँ, रस की रसीलणी ॥ २ ॥
ऐसी कहा बेद पढ़ी, छिन मेँ बिमाण चढ़ी।
हरिजी सूँ बाँध्यो हेत, बैकुँठ मेँ झूलणी ॥ ३ ॥

(१) सूखने पर। (२) भोजन करो। (३) बेर। (४) नेमिन, शुद्ध। (५) मैली।

ऐसी प्रीत करे सोई, दास मीरा तरै जोइ।
पतित - पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

स्याम मो सूँ ऐंडो डोले हो ॥ टेक ॥
औरन सूँ खेले धमार, म्हाँ सू मुखहुँ न बोले हो ॥ १ ॥
म्हारी गलियाँ ना फिरे, वा के आँगण डोले हो ॥ २ ॥
म्हाँरी अँगुली न छुवे, वा की बहियाँ मोरे हो ॥ ३ ॥
म्हाँरे अँचरा ना छुवे, वा को घूँघट खोले हो ॥ ४ ॥
मीरा को प्रभु साँवरो, रँग-रसिया डोले हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

जावादे री जावादे जोगी किसका मीत ॥ टेक ॥
सदा उदासी मोरी सजनी निपट अटपटी रीत ॥ १ ॥
बोलत बचन मधुर से मीठे जोरत नाहीं प्रीत ॥ २ ॥
हूँ जाणूँ या पार निभेगी छोड़ चला अध बीच ॥ ३ ॥
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, प्रेम पियारा मीत ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मेरो मन हरि सूँ जोर्‌यो, हरि सूँ जोर सकल सूँ तोर्‌यो ॥टेक॥
मेरी प्रीत निरंतर हरि सूँ, ज्यूँ खेलत बाजीगर गोर्‌यो[1]।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणो मारण कूँ दौर्‌यो ॥१॥
जहर देन की घात विचारी, निरमल जल में ले बिष घोर्‌यो।
जब चरणोदक सुणयो सरवणा, राम भरोसे मुख में ढोर्‌यो[2] ॥२॥
नाचन लगी जब घूँघट कैसो, लोक लाज तिणका ज्यूँ तोर्‌यो।
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी, मन हस्ती अंकुस दे मोर्‌यो ॥३॥
प्रगट निसान बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोर्‌यो।
मीरा सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति मुख मोर्‌यो ॥४॥

(१) मारवाड़ में नजरबन्द को कहते हैं। (२) डाला।

॥ शब्द ५ ॥

मत बरजे माइड़ी[1], साधा दरसण जाती ।
म नाम हिरदे बसे, माहिले[2] मन माती[3] ॥ टेक ॥
ाइ कहै सुन धीहड़ी[4], कहे गुण फूली ।
ोक सोवै सुख नींदड़ी, थूँ क्यूँ रैणज[5] भूली ॥ १ ॥
ली दुनियाँ बावली[6], ज्याँ कूँ राम न भावे ।
ज्याँ रे हिरदे हरि बके, त्याँ कूँ नींद न आवे ॥ २ ॥
चौबास्याँ की बावड़ी, ज्याँ कूँ नीर न पीजे ।
हरि नाले अमृत झरे, ज्याँ की आस करीजे ॥ ३ ॥
रूप सुरंगा राम जी, मुख निरखत जीजे ।
मीरा व्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

राम नाम मेरे मन बसियो, रसियो राम रिझाऊँ ए माय ।
मैं मँद भागिण करम अभागिण, कीरत कैसे गाऊँ ए माय ॥१॥
बिरह पिंजर की बाड़[7] सखीरी, उठ कर जी हुलसाऊँ ए माय ।
मन कूँ मार सजूँ[8] सतगुरु सूँ, दुरमत दूर गसाऊँ ए माय ॥२॥
डाको[9] नाम सुरत की डोरी, कड़्याँ[10] प्रेम चढ़ाऊँ ए माय ।
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ ए माय ॥३
तन करूँ ताल मन करूँ मोरचँग, सोती सुरत जगाऊँ ए माय ।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तौ अमरापुर पाऊँ ए माय ॥
मो अबला पर किरपा कीज्यो, गुण गोबिँद के गाऊँ ए माय ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रज चरणाँ की पाऊँ ए माय ॥

॥ शब्द ७ ॥

राणा जी थाँरो देसड़लो[11] रँग रूढ़ो[12] ॥ टेक ॥
थाँरे मुलक में भक्ति नहीं छे, लोग बसैं सब कूड़ो[13] ॥

---

(१) मा । (२) अंतर । (३) निज मन में मगन हूँ । (४ बेटी । (५) रात । (६) (७) बाड़ा । (८) मिलने की तैयारी करूँ । (९) डंका । (१०) कड़ियाँ जिनसे ढोल की डोरी को खींचते हैं । (११) देश, मुल्क । (१२, बुरा । (१३) झूठे ।

पाट पटंबर सब ही मैं त्यागा, सिर बाँधूँ ली जूड़ा[१] ॥ २ ॥
माणिक मोती सबही मैं त्यागा, तज दियो कर को चूड़ा[२] ॥ ३ ॥
मेवा मिसरी मैं सबही त्यागा, त्याग्या छे सक्कर बूरो ॥ ४ ॥
तन की मैं आस कबहुँ नहिँ कीनी, ज्यूँ रण माहीँ सूरो ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बर पायो मैं पूरो ॥ ६ ॥

॥ शब्द ८ ॥

राणा जी थें क्याने[३] राखो मोसूँ बेर ॥ टेक ॥
राणा जी म्हाँने असा[४] लगत हैं, ज्यूँ बिरछन में केर[६] ॥१॥
मारूँ[७] धर[८] मेवाड़[९] मेरतो[१०], त्याग दियो थाँरो सहर ॥२॥
थाँरे रूस्याँ[११] राणा कुछ नाहिँ बिगड़ै, अब हरि कीन्हीँ मेहर ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हठ कर पी गइ जहर ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

राणा जी मुझे यह बदनामी लगे मीठी ॥ टेक ॥
कोई निंदो कोई बिंदो, मैं[१२] चलूँगी चाल अपूठी[१३] ॥१॥
साँकली गली में सतगुर मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी ॥२॥
सतगुरु जी सूँ बातज[१४] करताँ, दुरजन लोगाँ ने दीठी[१५] ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन- जलो जा अँगीठी ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

कमल दल लोचना तैं ने कैसे नाथ्यो भुजंग[१६] ॥ टेक ॥
पैसि पियाल[१७] काली नाग नाथ्यो, फण फण निर्त करंत ॥ १ ॥
कूद पर्‌यो न डर्‌यो जल माहीँ, और काहू नहिँ संक ॥ २ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, श्री वृन्दाबन चंद ॥ ३ ॥

---

(१) जटा। (२) चूड़ियाँ। (३) क्यों। (४) ऐसा। (५) पेड़। (६) एक काँटेदार झाड़ जिसमें फल या छाया नहीं होती। (७) मारवाड़ देश। (८) घर। (९) देश का नाम जिसकी राजधानी उदयपुर है। (१०) मारवाड का एक नगर जहाँ मीराबाई का जन्म हुआ था। (११) नाराज़ी से। (१२) चाहे कोई निंदा करे चाहे स्तुति। (१३) उलटी। (१४) बातें। (१५) देखा। (१६) नाग। (१७) पाताल में पैठ कर।

॥ शब्द ११ ॥

पिया मोहिँ आरत तेरी हो ।
आरत तेरे नाम की, मोहिँ साँझ सबेरी हो ॥ १ ॥
या तन को दिवला[1] करूँ, मनसा की बाती हो ।
तेल जलाऊँ प्रेम को, बालूँ दिन राती हो ॥ २ ॥
पटियाँ पारूँ गुरुज्ञान की, बुधि माँग सँवारूँ हो ।
पीया तेरे कारणे, धन जोबन गारूँ हो ॥ ३ ॥
सेजड़िया बहु रंगिया, चंगा फूल बिछाया हो ।
रैण गई तारा गिणत, प्रभु अजहुँ न आया हो ॥ ४ ॥
आया सावण भादवा, बर्षा ऋतु छाई हो ।
स्याम पधारया सेज में, सूती सैन जगाई हो ॥ ५ ॥
तुम हो पूरे साइयाँ, पूरा सुख दीजे हो ।
मीरा ब्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजे हो ॥ ६ ॥

॥ शब्द १२ ॥

करम गति टारे नाहिँ टरे ॥ टेक ॥
सतबादी हरिचँद से राजा, सो तो नीच घर नीर भरे ॥ १ ॥
पाँच पांडु अरू कुंती द्रोपती, हाड़ हिमालय गरे ॥ २ ॥
जज्ञ किया बलि लेण इंद्रासन, सो पाताल धरे ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बिष से अमृत करे ॥ ४ ॥

॥ शब्द १३ ॥

पिया तेरे नाम लुभाणी हो ।
नाम लेत तिरता सुण्या, जैसे पाहण पाणी[2] हो ॥ टेक ॥
सुकिरत कोई ना कियो, बहु करम कुमाणी[3] हो ।
गणिका कीर पढ़ावताँ, बैकुंठ बसाणी हो ॥ १ ॥

---

(१) दीपक। (२) लंका के पुल के पत्थर राम नाम लिख देने से समुद्र पर तैरते थे। (३) बहुत से खोटे कर्म कमाये।

अरध नाम कुंजर लियो, वा की अवध घटानी हो।
गरुड़ छाँड़ि हरि धाइया, पसु जूण[1] मिटाणी हो ॥ २ ॥
अजामेल से ऊधरे[2], जम त्रास नसानी हो।
पुत्र हेतु पदवी दई, जग सारे जाणी हो ॥ ३ ॥
नाम महातम गुरु दियो, परतीत पिछाणी हो।
मीरा दासी रावली, अपणी कर जाणी हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥ टेक ॥
भाई छोड़्या बँधु छोड़्या छोड़्या सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ १ ॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेम नीर सींच सींच बिष बेल धोई ॥ २ ॥
दधि मथ घृत काढ़ लियो डार दई छोई।
राणा विप को प्याल्यो भेज्यो पीय मगन होई ॥ ३ ॥
अब तो बात फैल पड़ी जाणे सब कोई।
मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई ॥ ४ ॥

॥ शब्द १५ ॥

मेरे मन राम नामा बसी।
तेरे कारण स्याम सुँदर सकल लोगाँ हँसी ॥ १ ॥
कोई कहे मीरा भई बौरी कोई कहे कुल-नसी।
कोई कहे मीरा दीप आगरी नाम पिया सूँ रसी ॥ २ ॥
खाँड़[3] धार भक्ती की न्यारी काटि है जम फँसी[4]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सब्द सरोवर धसी ॥ ३ ॥

(१) योनि। (२) उद्धार पाया। (३) खाँड़ा। (४) फाँसी।

॥ शब्द १६ ॥

मैं तो लागि रहौं नँदलाल से ॥ टेक ॥
हमरे बाटहिं दूज न यार[1] ।
लाल लाल पगिया झिन झिन बार[2] ॥ १ ॥
साँकर खटुलना दुइ जन बीच ।
मन कइले बरषा तन कइले कीच ॥ २ ॥
कहाँ गइलें बछरू कहँ गइलीं गाय ।
कहँ गइलें धेनु चरावन राय ॥ ३ ॥
कहँ गइलीं गोपी कहँ गइलें बाल ।
कहँ गइलें मुरली बजावनहार ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर लाल ।
तुम्हरे दरस बिन भइल बेहाल ॥ ५ ॥

॥ शब्द १७ ॥

गोबिंद सूँ प्रीत करत, तबहिँ क्यूँ न हटकी ।
अब तो बात फैल परी, जैसे बीज बट की ॥ १ ॥
बीज को बिचार नाहिँ, छाँय परी तट[3] की ।
अब चूको तो ठौर नाहिँ, जैसे कला नट की ॥ २ ॥
जल की घुरी[4] गाँठ परी, रसना गुन रट की ।
अब तो छुड़ाय हारी, बहुत बार झटकी ॥ ३ ॥
घर घर में घोल मठोल, बानी घट घट की ।
सबही कर सीस धारि, लोक लाज पटकी ॥ ४ ॥
मद की हस्ती[5] समान, फिरत प्रेम लटकी ।
दास मीरा भक्ति बुंद, हिरदय बिच गटकी ॥ ५ ॥

॥ शब्द १८ ॥

अब नहिँ बिसरूँ, म्हाँरे हिरदे लिख्यो हरि नाम ।
म्हाँरे सतगुरु दियो बताय, अब नहिँ बिसरूँ रे ॥ टेक

(१) मेरे दूसरा प्रीतम नहीं है। (२) महीन चाल। (३) नदी का किनारा। (४) : घूमने से भँवर बन जाती है। (५) मस्त हाथी।

मीरा बैठी महल में रे, ऊठत बैठत राम ।
सेवा करस्याँ साध की, म्हाँरे और न दूजो काम ॥ १ ।
राणोजी बतलाइया[१] कइ[२] देणो जबाब ।
पण[३] लागो हरि नाम सूँ, म्हाँरे दिन दिन दूनो लाभ ॥ २ ।
सीप भर्‌यो पानी पिवे रे, टाँक[४] भर्‌यो अन्न खाय ।
बतलायाँ[१] बोली नहीं रे, राणोजी गया रिसाय[५] ॥ ३ ।
विष रा प्याला राणोजी भेज्या, दीजो मेड़तणी के हाथ ।
कर चरणामृत पीगई, म्हाँरा सबल धणी का साथ ॥ ४ ।
बिष को प्यालो पीगई, भजन करे उस ठौर ।
थाँरी मारी ना मरूँ, म्हाँरी राखणहारो और ॥ ५ ।
राणोजी मो पर कोप्यो[६] रे, मारूँ एकन सेल[७] ।
मार्‌याँ पराछित लागसी, माँ ने दीजो पीहर[८] मेल[९] ॥ ६ ॥
राणो मो पर कोप्यो रे, रती न राख्यो मोद[१०] ।
ले जाती वैकुंठ में, यो तो समझ्यो नहीं सिसोद[११] ॥ ७ ॥
छापा तिलक बनाइया, तजिया सब सिंगार ।
मैं तो सरने राम के, भल निन्दो संसार ॥ ८ ॥
माला म्हाँरे देवड़ी[१२], सील बरत सिंगार ।
अबके किरपा कीजियो, हूँ तो फिर बाँधूँ तलवार ॥ ९ ॥
रथाँ बैल जुताय के, ऊँटाँ कसियो भार ।
कैसे तोड़ूँ राम सूँ, म्हाँरो भो भो रो भरतार[१३] ॥ १० ॥
राणो साँड़्यो[१४] मोकल्यो[१५] जाज्यो एके दौड़ ।
कुल की तारण अस्तरी, या तो मुरड़[१६] चली राठोड़[१७] ॥११॥

---

(१) पूछा । (२) कहना । (३) पाजी । (४) चार माशा । (५) गुस्सा हुआ । (६) गुस्सा हुआ । (७) बरछी । (८) मायका । (९) भेजना । (१०) हर्ष । (११) उदयपुर के राना की जाति का नाम सिसोद है । (१२) भगवंत की । (१३) जन्मान्त जन्म का पति । (१४) ऊँट । (१५) भेजा । (१६) मुड़ कर या रूठ कर । (१७) मीरा के बाप की जाति ।

साँड्यौ पाछो फेर्यो रे, परत न देस्याँ पाँव[1] ।
कर सूरा पण नीसरी[2], म्हाँरे कुण राणे कुण राव ॥ १२ ॥
संसारी निन्दा करे रे, दुखियो सब परिवार ।
ल सारो ही लाजसी, मीरा थेँ जो भया जी ख्वार[3] ॥ १३ ॥
ती माती प्रेम की, बिष भगत को मोड़ ।
ाम अमल माती रहे, धन मीरा राठोड़ ॥ १४ ॥

॥ शब्द १९ ॥

म्हाँने चाकर राखो जी, गिरधारी लला चाकर राखो जी ॥ टेक ॥
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ ।
बृन्दाबन की कुंज गलिन में, गोबिँद लीला गासूँ ॥ १ ॥
चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भव भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ॥ २ ॥
मोर मुकट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला ।
बृन्दाबन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ॥ ३ ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी ।
साँवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्मी सारी ॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करने सन्यासी ।
हरी भजन कूँ साधू आये, बृन्दाबन के बासी ॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गहिर गँभीरा, हृदे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हो, जमुनाजी के तीरा ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

मीरा लागो रंग हरी, औरन सब रँग अटक परी ॥ टेक ॥
चूड़ो म्हाँरे तिलक अरु माला, सील बरत सिंगारो ।
और सिँगार म्हाँरे दाय[1] न आवे, ये गुरु ज्ञान हमारो ॥ १ ॥

---

(१) कभी पाँव न रक्खूँगी । (२) बहादुरों की नाईं प्रण करके निकाली हूँ । (३) खराब

कोइ निन्दो कोइ बिन्दो मैं तो, गुन गोबिंद का गास्याँ ।
जिन मारग म्हाँरा साध पधारे, उन मारग मैं जास्याँ ॥ २ ॥
चोरि न करस्याँ जिव न सतास्याँ, काँई[1] करसी म्हाँरो कोय ।
गज से उतर के खर नहिं चढ़स्याँ, ये तो बात न होय ॥ ३ ॥
सती न होस्याँ गिरधर गास्याँ, म्हाँरा मन मोहो घणनामी ।
जेठ बहू को नातो न राणा जी, हूँ सेवक थैं स्वामी ॥ ४ ॥
गिरधर कंथ[2] गिरधर धनि म्हाँरे, मात पिता वोइ भाई ।
थैं थाँरे मैं म्हाँरे[3] राणा जी, यूँ कहे मीरा बाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द २१ ॥

अरज करे छे मीरा राकड़ी, ऊभी ऊभी[4] अरज करे छे ॥
मणि-धर[5] स्वामी म्हाँरे मँदिर पधारो, सेवा करूँ दिन रातड़ी ॥१॥
फुलना रे तोड़ा ने[6] फुलना रे गजरा, फुलना रे हार फुल पाँखड़ी ॥२॥
फुलना रे गादी ने फुलना रे तकिया, फूलना रे याथरी[7] पछेड़ी ॥३॥
पय पकवान मिठाई ने मेवा, सेवैयाँ ने सुंदर दहीँड़ी[9] ॥४॥
लवँग सुपारी ने एलची[10], तज वाला काथा[11] चुना री पान बीड़ी ॥५॥
सेज बिछाऊँ ने पासा मँगाऊँ, रमबा[12] आवो तो जाय रातड़ी ॥६॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, (बाला) तम ने जोताँ ठरे आँखड़ी[13] ॥७॥

॥ शब्द २२ ॥

आज म्हारे साधू जन नो[14] संग रे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ ॥टेक॥
साधू जन नो संग जो करिये, चढ़े ते चौगणो रंग रे ॥ १ ॥
साकट[15] जन नो संग न करिये, पड़े भजन में भंग रे ॥ २ ॥
अठसठ तीरथ संतों ने चरणे, कोटि कासी ने सोय गंग रे ॥ ३ ॥
निन्दा करसे नरक कुँड माँ जासे, थासे[16] आँधला अपंग रे ॥ ४ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, संतोँ नीरज म्हाँरे अंग रे ॥ ५ ॥

---

(१) क्या । (२) पति । (३) तुम अपनी राह मैं अपनी राह । (४) खड़ी खड़ी । (५) जड़ाऊ गहने पहिने हुए । (६) और । (७) चद्दर । (८) पिछवई । (९) एक मिठाई का नाम । (१०) इलायची । (११) कत्था । (१२) खेलना । (१३) प्यारे तुम को देख कर मेरी आँखें ठंडी हुईं । (१४) का । (१५) भक्ति हीन । (१६) हो जायगा ।

॥ शब्द २३ ॥

लेताँ लेताँ राम नाम रे, लोकड़ियाँ[1] तो लाजे मरे छे ॥ टेक ॥
हरि मंदिर जाताँ पावलिया[2] रे दूखे, फिरि आवे सारो गाम[3] रे ॥१॥
झगड़ो थाय[4] त्याँ[5] दौड़ी ने जाय रे, मुकीने[6] घर ना काम रे ॥२॥
भाँड भवैया गनिका नृत्य करताँ, बेसी[7] रहे चारे जाम[8] रे ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित हाम रे ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

आवत मोरा गलियन में गिरधारी, मैं तो छुप गई लाज की मारी ॥टेक
कुसुमल[9] पाग के केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी ।
मुकट ऊपरे छत्र बिराजे, कुंडल की छबि न्यारी ॥ १ ॥
केसरी चीर दरयाई को लेंगो[10], ऊपर अँगिया भारी ।
आवते देखी किसन मुरारी, छुप गई राधा प्यारी ॥ २ ॥
मोर मुकट मनोहर सोहे, नथनी की छबि न्यारी ।
गल मोतिन की माल बिराजे, चरण कमल बलिहारी ॥ ३ ॥
ऊभी[11] राधा प्यारी अरज करत है, सुणजे किसन मुरारी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी ॥४॥

॥ शब्द २५ ॥

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ॥ टेक ॥
साँप पिटारा राणा भेज्या, मीरा हाथ दियो जाय ।
न्हाय धोय जब देखण लागी, सलिगराम गई पाय ॥ १ ॥
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय ।
न्हाय धोय जब पीवण लागी, हो अमर अँचाय[12] ॥ २ ॥
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीरा सुलाय ।
साँझ भई मीरा सोवण लागी, मानो फूल बिछाय ॥ ३ ॥

---

(१) लोग । (२) पाँव । (३) गाँव । (४) हो । (५) तहाँ । (६) छोड़कर । (७) बैठी (८) --- । (९) कुसुम के रंग की । (१०) लहँगा । (११) खड़ी । (१२) पीकर ।

मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द २६ ॥

राणा जी म्हाँरी प्रीत पुरबली मैं क्या करूँ ॥ टेक ॥
राम नाम बिन घड़ी न सुहावे, राम मिले म्हाँरा हियरा ठराय[१]।
भोजनियाँ नहिं भावे म्हाँने, नींदड़ली नहिं आय ॥ १ ॥
बिष का प्याला भेजिया जी, जावो मीरा पास।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरे रामजी के बिस्वास ॥ २ ॥
बिष का प्याला पी गई जी, भजन करे राठोर[२]।
थाँरी मारी न मरूँ, म्हाँरो राखणहारो और ॥ ३ ॥
छापा तिलक बनाविया जी, मन में निस्चय धार।
रामजी काज सँवारिया जी, म्हाँने भावें गरदन मार ॥ ४ ॥
पेयाँ[३] बासक[४] भेजिया जी, ये है चन्दनहार।
नाग गले मे पहिरिया, म्हाँरो महलाँ भयो उजार ॥ ५ ॥
राठौड़ाँ की धीयड़ी[५] जी, सीसोद्याँ[६] के साथ।
ले जाती बैकुंठ को, म्हाँरी नेक न मानी बात ॥ ६ ॥
मीरा दासी राम की जी, राम गरीब-निवाज।
जन मीरा की राखजो, कोइ बाँह गहे की लाज ॥ ७ ॥

॥ शब्द २७ ॥

राणा जी मैं साँवरे रँग राची ॥ टेक ॥
साज सिँगार बाँध पग घुँघरू, लोक लाज तज नाची ॥ १ ॥
गई कुमिति लइ साध की संगत, भगत रूप भई साँची ॥ २ ॥
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल ब्याल सोँ बाची ॥ ३ ॥
उन बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काची ॥ ४ ॥
मीरा श्री गिरधरन लाल सोँ, भगति रसाली याची[७] ॥ ५ ॥

---

(१) शीतल होता है। (२) मीरा जो राठोर जाति की थी। (३) संदूक। (४) साँप। (५) बेटी। (६) राना की जाति का नाम। (७) माँगी।

॥ शब्द २८ ॥

राणाजी मैं गिरधर रे घर जाऊँ।
गिरधर म्हाँरो साचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ॥ १ ॥
रैन पड़े तब ही उठ जाऊँ, भोर भये उठ आऊँ।
रैन दिना वा के सँग खेलूँ, ज्यों रीझे ज्यों रिझाऊँ॥ २ ॥
जो वस्त्र पहिरावे सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरे उनके प्रीत पुरानी, उन बिन पल न रहाऊँ॥ ३ ॥
जहँ बैठावे जित ही बैठूँ, बेचे तौ बिक जाऊँ।
जन मीरा गिरधर के ऊपर, बारबार बल जाऊँ॥ ४ ॥

॥ शब्द २९ ॥

राणा जी मैं तो गोबिंद का गुण गास्याँ॥ टेक ॥
चरणामृत का नेम हमारे, नित उठ दरसण जास्याँ॥ १ ॥
हरि मन्दिर में निरत करास्याँ, घूँघरिया घमकास्याँ॥ २ ॥
राम नाम का जहाज चलास्याँ, भवसागर तर जास्याँ॥ ३ ॥
यह संसार बाड़[1] का काँटा, ज्याँ संगत नहिं जास्याँ॥ ४ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, निरख परख गुण गास्याँ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३० ॥

राम तने[2] रँग राची, राणा मैं तो साँवलिया रँग राची रे॥ टेक॥
ताल पखावज मिरदँग बाजा, साधाँ आगे नाची रे॥ १ ॥
कोई कहे मीरा भई बावरी, कोई कहे मद माती रे॥ २ ॥
विष का प्याला राणा भर भेज्या, अमृत कर आरोगी[3] रे॥ ३ ॥
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी रे॥ ४ ॥

॥ शब्द ३१ ॥

राणाजी तैं जहर दियो मैं जाणी॥ टेक ॥
जैसे कंचन दहत अगिन में, निकसत बाराबाणी[4]॥ १ ॥
लोक लाज कुल काण जगत की, दइ बहाय जस पाणी॥ २ ॥

---

(१) बाड़ा। (२) के। (३) पी लिया। (४) खालिस कुंदन।

अपने घर का परदा करले, मैं अबला बौराणी ॥ ३ ॥
तरकस तीर लग्यो मेरे हियरे, गरक[1] गयो सनकाणी[2] ॥ ४ ॥
सब संतन पर तन मन वारौं, चरण कमल लपटाणी ॥ ५ ॥
मीरा को प्रभु राख लई है, दासी अपणी जाणी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३२ ॥

सीसोद्या[3] राणो, प्यालो म्हाँने क्यूँ रे पठायो ॥ टेक ॥
भली बुरी तो मैं नहिँ कीन्ही, राणा क्यूँ है रिसायो ।
थाँने म्हाँने देह दिवी है, ज्याँ रो हरि गुण गायो[4] ॥ १ ॥
कनक कटोरे ले विष घोल्यो, दयाराम पंडो लायो ।
अठी उठी[5] तो मैं देख्यो, कर चरणामृत पायो ॥ २ ॥
आज काल की मैं नहिँ राणा, जद[6] यह ब्रह्मँड छायो ।
मेढ़तियाँ घर जन्म लियो है, मीरा नाम कहायो ॥ ३ ॥
प्रहलाद की प्रतिज्ञा राखी, खंभ फाड़ बेगो[7] धायो ।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जन को बिड़द[8] बढ़ायो ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३३ ॥

हेली म्हाँ सूँ हरि बिन रह्यो न जाय ॥ टेक ॥
सासु लड़े मेरी नणद खिजावे, राणा रह्या रिसाय ॥ १ ॥
पहरो भी राख्यो चौकी बिठारच्यो, ताला दियो जड़ाय ॥ २ ॥
पूर्व जन्म की प्रीत पुराणी, सो क्यूँ छोड़ी जाय ॥ ३ ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, और न आवे म्हाँरी दाय[9] ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३४ ॥

मुझ अबला ने मोटी नीराँत[10] थई[11] सामलो[12] घरेनु म्हाँरे साँचु[13] रे ॥ टेक
वाली घड़ाऊँ[14] बीठल वर केरी, हार हरि नो म्हाँरे हइये रे ।
चीन माल चतुरभुज चुड़लो[15], सिद सोनी[16] घरे जइये रे ॥ १ ॥

---

(१) डूबना, घुसना। (२) चुभना। (३) राना की जाति। (४) जिस मालिक ने तुम्हें और हमें दोनों को देह दी है उसी का मैंने गुन गाया। (५) इधर उधर। (६) जब। (७) जल्दी से। (८) यश, नाम। (९) पसन्द। (१०) भरोसा। (११) हुआ। (१२) साँवलिया (१३) आया। (१४) कान की बाली गढ़वाऊँ। (१५) चूड़ा। (१६) सिद्ध सुनार।

झाँझरिया जग जीवन केरा, किस्न गलाँ[1] री कंठी रे।
बिछुवा घुँघरा राम नरायण, अनवट अंतरजामी रे ॥२॥
पेटी घड़ाऊँ पुरुसोतम केरी, टीकम नाम नूँ ताली रे।
कुँची[2] कराऊँ करुना नँद केरी, तेमाँ घैणा[3] नूँ मारूँ रे ॥३॥
सासर बासो सजी ने बैठी, हवे[4] नथी काइ काँचू[5] रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि नु चरणे जाँचूँ रे ॥४॥

॥ शब्द ३५ ॥

[मीरा]–माई म्हाँने सुपने में, परण[6] गया जगदीस।
सोती को सुपना आविया जी, सुपना बिस्वा बीस ॥ टेक ॥
[मा]–गैली[7] दीखे मीरा बावली, सुपना आल जंजाल।
[मीरा]–माई म्हाँने सुपने में, परण गया गोपाल ॥ १ ॥
अंग अंग हल्दी मैं करी जी, सुधे[8] भीज्यो गात।
माई म्हाँने सुपने में, परण गया दीनानाथ ॥ २ ॥
छप्पन कोट जहाँ जान[9] पधारे, दुलहा श्री भगवान्।
सुपने में तोरन बाँधियो जी, सुपने में आई जान ॥ ३ ॥
मीरा को गिरधर मिल्या जी, पूर्ब जनम के भाग।
सुपने में म्हाँने परण गया जी, हो गया अचल सुहाग ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३६ ॥

इन सरवरिया पाल[10] मीरा बाई साँपड़े[11]।
साँपड़ किया अस्नान, सुरज स्वामी जप करे ॥ १ ॥
[प्रश्न] होय बिरंगी[12] नार, डगराँ बिच क्योँ खड़ी।
काईं थारो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी ॥ २ ॥
[उत्तर] नहीं म्हाँरो पीहर दूर, घराँ सासू लड़ी।
चल्यो जा रे असल गँवार, तुझे मेरी क्या पड़ी ॥ ३ ॥

(१) गले की। (२) कुंजी। (३) गहना। (४) अब। (५) चोली। (६) ब्याह। (७) [illegible]। (८) अमृत। (९) बारात। (१०) किनारे। (११) नहाती है। (१२) उदास।

गुरु म्हाँरा दीनदयाल, हीराँ का पारखी ।
दियो म्हाँने ज्ञान बताय, सँगत कर साध री ॥
इन सरवरिया रा हंस, सुरँग थारी पाँखड़ी ।
राम मिलन कद होय, फड़ाके म्हाँरी आँख री ॥
राम गये बनबास को, सब रँग ले गये ।
ले गये म्हाँरी काया को सिँगार, तुलसी की माला दे गये
खोई कुल की लाज, मुकँद थारे कारने ।
बेगहि लीजो सम्हाल, मीरा पड़ी बारने[1] ॥

॥ शब्द ३७ ॥

रे साँवलिया म्हाँरे आज रँगीली गणगोर[2] छे जी ॥ टेक ॥
काली पीली बदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनघोर छे जी ॥१॥
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छे जी ॥२॥
आप रँगीला सेज रँगीली, और रँगीलो सारो साथ छे जी ॥३॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरनाँ में म्हाँरो जोर[3] छे जी ॥४॥

॥ शब्द ३८ ॥

सुन लीजे बिनती मोरी, मैं सरन गही प्रभु तोरी ॥टेक॥
तुम तो पतित अनेक उधारे, भवसागर से तार्यो ॥ १ ॥
मैं सब का तो नाम न जानौँ, कोइ कोइ भक्त बखानौँ ॥ २ ॥
अम्बरीक सुदामा नामी, पहुँचाये निज धामा ॥ ३ ॥
ध्रुव जो पाँच बरस को बालक, दरस दियो घनस्यामा ॥ ४ ॥
धना भक्त का खेत जमाया, कबिरा बैल चराया ॥ ५ ॥
सेवरी के जूठे फल खाये, काज किये मन भाये ॥ ६ ॥
सदना औ सेना नाई को, तुम लीन्हा अपनाई ॥ ७ ॥
कर्मा की खिचड़ी तुम खाई, गनिका पार लगाई ॥ ८ ॥
मीरा प्रभु तुम्हरे रँग राती, जानत सब दुनियाई ॥ ९ ॥

❀ समाप्त ❀

(१) दरवाजे पर । (२) स्त्रियों के एक त्योहार का नाम । (३) दावा ।

हिन्दी पुस्तक माला का सूचीपत्र

काव्य-निर्णय	१॥)
अयोध्या काण्ड	२)
आरण्य काण्ड	१)
सुन्दर काण्ड	१)
उत्तर काण्ड	१)
गुटका रामायण सजिल्द	॥।)
तुलसी ग्रन्थावली	६)
श्रीमद् भागवत	॥।)
सचित्र हिन्दी महाभारत	५)
विनय पत्रिका	६)
विनय कोश	४)
फ्रान्स की राज्य क्रान्ति का इतिहास	।=)
कवित्त रामायण	।=)
हनूमान बाहुक	-)॥
सिद्धि	॥)
प्रेम परिणाम	॥)
सावित्री और गायत्री	॥।)
कर्मफल	॥।)
महारानी शशिप्रभा देवी	१।)
द्रौपदी	॥।)
नल-दमयन्ती	॥।)
भारत के वीर पुरुष	२)
प्रेम-तपस्या	॥)
करुणादेवी	॥।)
उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा (सचित्र)	॥)
संदेह (सजिल्द)	१।)
नरेन्द्र भूषण	१)
युद्ध की कहानियाँ	।=)
गद्य पुष्पाञ्जलि	॥।)
दुःख का मीठा फल	१)
नव कुसुम (प्रथम भाग)	॥।)
„ (द्वितीय „)	॥।)

नाट्य पुस्तकमाला—

पृथ्वीराज चौहान	१)
समाज चित्र	॥।)
भक्त प्रह्लाद	॥)

बाल पुस्तकमाला—

सचित्र बाल शिक्षा	(प्र० भा०)	।)
„ „	(द्वि० „)	।=)
„ „	(तृ० „)	॥)
दो वीर बालक		॥)
घोंघा गुरू की कथा		।)
बाल विहार (सचित्र)		=)
हिन्दी कवितावली		=)
„ साहित्य प्रदीप		॥)
सती सीता		॥)
स्वदेश गान	(प्र० भा०)	-)
„	(द्वि० „)	-)
„	(तृ० „)	-)

चित्र माला—

प्रथम	भाग	॥।)
द्वितीय	„	॥।)
तृतीय	„	१)
चतुर्थ	„	१)
चारों भाग एक साथ लेने से		२॥)

संत महात्माओं के चित्र—

दादूदयाल	=)
मीराबाई	=)
दरिया साहब (बिहार)	=)

कथा साहित्य

उलझी लड़ियाँ	(कहानी संग्रह)	१॥)
प्रवाह	(उपन्यास)	२॥)
चक्षु-दान	„	१॥)

पुस्तकें मँगाने का पता—मैनेजर, बेलविडियर प्रेस, इलाहाबाद—२

रामायण बड़ी पोथी, विनय पत्रिका, सुमनोऽञ्जलि, भारत की सती स्त्रियां स्टाक में नहीं हैं छप रही है—

एक साथ अधिक पुस्तक मंगाने वाले को तथा पुस्तक विक्रेताओं को संतोषजनक कमीशन दिया जावेगा।